WWW.Kanchanujala.in

हिन्दी दैनिक

kanchanujala14@gmail.com

कंचन उजाला

लखनऊ से प्रकाशित

सच्चाई के साथ

वर्षः 01 अंक : 268 | लखनऊ, गुरुवार, 17 सितम्बर, 2020 | पृष्ठ- 6 | मूल्य - 1 रुपये

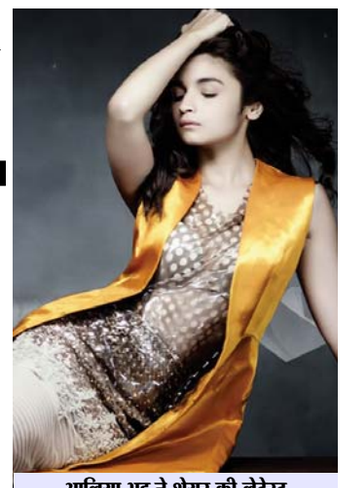

आलिया भट्ट ने शेयर की लेटेस्ट पोस्ट, लिखा- नहीं रुक सकती, न रुकूंगी, आगे बढ़ती रहूंगी

कोरोना वायरसः सेना की तीनों विंग में अब तक 19 हजार से ज्यादा जवान संक्रमित मिले, 35 जवानों ने जान गंवाई

देश में अब तक 50.41 लाख केस

नयी दिल्ली, एजेंसी। देश में अब तक आर्मी, एयरफोर्स और नेवी के 19 हजार 839 जवान कोरोना संक्रमित हो चुके हैं। इनमें सबसे ज्यादा 16 हजार 758 जवान आर्मी, 1716 एयरफोर्स और 1365 जवान नेवी से हैं। संक्रमण के चलते अब तक 35 जवानों की मौत हो चुकी है। इनमें सबसे ज्यादा 32 आर्मी के जवान थे और तीन एयरफोर्स के। बुधवार को यह जानकारी केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्रीपद नाइक ने लोकसभा में दी। उन्होंने बताया कि कोरोना से जान गंवाने वाले जवानों के लिए किसी विशेष मुआवजे का प्रावधान नहीं है। ड्यूटी के दौरान जान गंवाने पर मिलने वाली टर्मिनल सुविधाएं जवानों के परिजन को दी जाएंगी। देश में कोरोना मरीजों का आंकड़ा 50 लाख 41 हजार 618 हो गया। उधर, एक्टिव मरीजों की संख्या 10 लाख के पार हो गई। यह कुल मरीजों का 19.90 प्रतिशत है। ंच सबसे ज्यादा संक्रमित राज्यों में कुल सक्रिय मरीजों के 60त्न केस हैं। इनमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश और तमिलनाडु शामिल हैं। उधर, रूस में कोरोना वैक्सीन स्पूतनिक बनाने वाली सरकारी कंपनी आरडीआईएफ ने भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनी डॉक्टर रेड्डी के साथ 10 करोड़ वैक्सीन डोज तैयार करने के लिए करार किया है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, मंगलवार को 90 हजार 123 मरीज मिले और 1290 लोगों की मौत हो गई। इसके साथ देश में कुल संक्रमितों की संख्या 50 लाख 20 हजार 360 हो गई है। इनमें 39 लाख 42 हजार 361 मरीज ठीक हो चुके हैं। 9 लाख 95 हजार 933 एक्टिव मरीज हैं। वहीं, अब तक कुल 82 हजार 66 लोगों की जान जा चुकी है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) ने बुधवार को बताया कि 15 सितंबर को 11 लाख 16 हजार 842 टेस्ट किए गए। अब तक 5 करोड़ 94 लाख 29 हजार 115 सैंपल की जांच की गई है। पुणे के सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और एस्ट्राजेनेका की कोरोना वैक्सीन के ट्रायल की अनुमति मिल गई है। ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (डीसीजीआई) ने मंगलवार देर रात मंजूरी दी। दरअसल, ब्रिटेन में इस वैक्सीन के ट्रायल में शामिल एक व्यक्ति की तबीयत खराब होने के बाद ट्रायल रोक दिया था। अब वहां फिर से ट्रायल शुरू हो गया। इस घटना के बाद भारत में भी ड्रग कंट्रोलर ने 11 सितंबर को ट्रायल रोक दिया था।

दशकों पुराने बाबरी मस्जिद विध्वंस केस में 30 सितंबर को आएगा फैसला

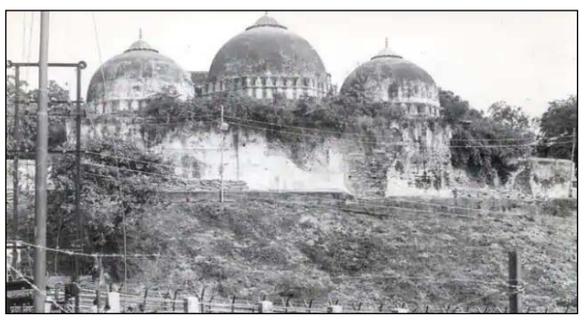

लखनऊ, एजेंसी। दशकों पुराने बाबरी मस्जिद विध्वंस केस में सीबीआई की विशेष अदालत 30 सितंबर को अपना अंतिम फैसला सुनाएगी। सीबीआई कोर्ट के जज सुरेंद्र कुमार यादव ने बुधवार को इस मामले में अंतिम फैसला देने के लिए 30 सितंबर की तारीख तय की है। बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में कुल 32 आरोपी हैं। इनमें भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, कल्याण सिंह और उमा भारती सहित अन्य लोगों के नाम शामिल हैं। इस महीने की शुरुआत में सीबीआई अदालत ने सभी 32 आरोपियों के बयान दर्ज करके मामले में सभी कार्यवाही पूरी कर ली थी। वकील केके मिश्रा ने बताया कि सीबीआई की अदालत ने बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में अंतिम फैसला देने के लिए 30 सितंबर की तारीख तय की है। मिश्रा मामले के 32 में से 25 आरोपियों की वकालत कर रहे हैं, जिनमें भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, कल्याण सिंह, उमा भारती सहित अन्य शामिल हैं पिछले महीने सुप्रीम कोर्ट ने लखनऊ में बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले की सुनवाई करने वाली विशेष सीबीआई अदालत की समय सीमा को 30 सितंबर तक बढ़ा दिया था। अयोध्या मामले में फैसला सुनाने की शीर्ष अदालत की समय सीमा 31 अगस्त को समाप्त हो गई थी।

सांसदों, विधायकों पर दर्ज आपराधिक मामले तेजी से निपटाए जाएंः केंद्र

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को पूर्व और वर्तमान सांसदों और विधायकों के खिलाफ लंबित आपराधिक मुकदमों के तेजी से निपटारे पर जोर दिया। केंद्र सरकार ने शीर्ष अदालत से कहा कि इन मामलों को एक निश्चित समय-सीमा में उनके नतीजों तक पहुंचाना जरूरी है। न्यायमूर्ति एन.वी. रमन की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष केंद्र की ओर से सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि इन मामलों के तेजी से निस्तारण के बारे में न्याय- मित्र विजय हंसारिया के सुझावों पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। मेहता ने कहा कि अगर विधि निर्माताओं के खिलाफ लंबित मामलों में उच न्यायालय ने कार्यवाही पर रोक लगाई है तो शीर्ष अदालत को उसे ऐसे मामले में निश्चित समय-सीमा के भीतर निर्णय करने का निर्देश देना चाहिए। मेहता ने कहा, शीर्ष अदालत जो भी निर्देश देगी, भारत सरकार उसका स्वागत करेगी। उन्होंने कहा कि यदि विशेष अदालतों में बुनियादी सुविधाओं से संबंधित कोई मसला है तो शीर्ष अदालत संबंधित राय सरकार को ऐसे मामले में यादा से यादा एक महीने में आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दे सकती है। इससे पहले, वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सुनवाई शुरू होते ही न्याय-मित्र हंसारिया और अधिवक्ता स्नेहा कलिता ने सांसदों और विधायकों के खिलाफ मामलों के विवरण की ओर पीठ का ध्यान आकर्षित किया। हंसारिया ने कहा कि भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत अनेक मामलों पर कर्नाटक जैसे उच न्यायालयों ने रोक लगा रखी है।

महाराष्ट्र सरकार का फैसला राज्य में 12500 पुलिसकर्मियों की होगी भर्ती

मुंबई, एजेंसी। कोरोना वायरस के चलते केन्द्र से लेकर राज्य सरकार तक जहां लगातार अपने खर्चों में कटौती कर रही है तो वहीं दूसरी तरफ उन युवाओं के लिए यह बड़ी खबर है जो पुलिस में जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। महाराष्ट्र सरकार ने ऐलान किया है कि वह बड़ी तादाद में पुलिस की भर्ती करने जा रही है। महाराष्ट्र के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार ने यह फैसला किया है कि 12,500 पुलिसकर्मियो की राज्य में बहाली की जाएगी। इससे पहले, उप-मुख्यमंत्री अजीत पवार ने जुलाई के महीने में कहा था, कानून व्यवस्था को मजबूत करने और पुलिस बल के कार्य तनाव को कम करने के लिए 10,000 कांस्टेबल की भर्ती की जाएगी। इसके अलावा, राज्य रिजर्व पुलिस बल की महिला बटालियन को भी नागपुर के कटोललतुका में स्थापित किया जाएगा। अजीत पवार ने कहा था कि इस कदम से शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के युवाओं को मदद मिलेगी क्योंकि उन्हें पुलिस बल में सेवा का मौका मिलेगा।

दिल्ली हिंसा मामला:15 आरोपियों के खिलाफ 15000 से अधिक पेज की चार्जशीट दायर

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने दिल्ली दंगों के 15 आरोपियों के खिलाफ बुधवार को गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम कानून, आईपीसी और आर्म्स एक्ट की धाराओं के तहत कड़कड़डूमा कोर्ट में 15,000 से अधिक पन्नों की एक और चार्जशीट दायर कर दी है। जानकारी के अनुसार, दिल्ली दंगों के मामले में आज दायर गई इस चार्जशीट में उमर खालिद और शरजील इमाम का नाम नहीं है। उन्हें कुछ दिन पहले ही गिरफ्तार किया गया था, उनका नाम सप्लीमेंट्री चार्जशीट में होगा। बता दें कि दिल्ली पुलिस कमिश्नर ने सोमवार को कहा था कि उत्तर-पूर्वी दिल्ली में हुए दंगे की साजिश की जांच पूरी होने के करीब है और इस सिलसिले में गुरुवार 17 सितंबर तक चार्जशीट फाइल कर दी जाएगी। श्रीवास्तव ने यह भी कहा था कि दिल्ली पुलिस जिन लोगों की जांच कर रही है, उनमें कुछ की काफी अच्छी सोशल मीडिया मौजूदगी है। उन्होंने कहा कि चूंकि हम जांच के आखिरी छोर पर पहुंच रहे हैं, उमर खालिद भी गिरफ्तार किया जा चुका है। इसलिए खासकर सोशल मीडिया और टीवी चैनलों पर अधिक शोर मचाया जा रहा है। वे हमें जांच से दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस कमिश्नर ने कहा कि दंगों के संबंध में कुल 751 मामले दर्ज किए और बहुत निष्पक्ष तरीके से जांच की गई। उन्होंने कहा कि 751 मामलों में से 340 को सुलझा लिया गया है, जबकि शेष मामलों में पुलिस को ज्यादा लीड नहीं मिली है। श्रीवास्तव ने कहा कि 751 में से एक मामला मूल रूप से साजिश के संबंध में है, और यह क्राइम ब्रांच द्वारा दर्ज किया गया है, लेकिन इसे स्पेशल सेल में स्थानांतरित कर दिया गया है, क्योंकि उन्हें 17 सितंबर तक चार्जशीट दाखिल करनी है। उन्होंने कहा कि अन्य 59 महत्वपूर्ण मामले तीन एसआईटी को दिए गए थे जो क्राइम ब्रांच के तहत गठित की गई थी और 59 मामलों में से 46 का सुलझा लिया गया था और इन सभी में, चार्जशीट फाइल कर दिए गए हैं और हम अब भी सप्लीमेंट्री चार्जशीट फाइल कर रहे हैं। पुलिस आयुक्त ने कहा कि कुछ मामले जिला पुलिस के पास हैं और वे यह सुनिश्चित करने के लिए भी अच्छा काम कर रहे हैं कि सभी साक्ष्य एकत्र कर उचित तरीके से पेश किए जाएं। गौरतलब है कि नागरिकता कानून के समर्थकों और विरोधियों के बीच संघर्ष के बाद 24 फरवरी को उत्तर-पूर्वी दिल्ली के जाफराबाद, मौजपुर, बाबरपुर, घोंडा, चांदबाग, शिव विहार, भजनपुरा, यमुना विहार इलाकों में साम्प्रदायिक दंगे भड़क गए थे।

नए संसद भवन के लिए दो कंपनियां- टाटा और लार्सन एंड टर्बो आईं आगे

नई दिल्ली, एजेंसी। नए संसद भवन के निर्माण के लिए टेक्निकल राउंड में क्वालिफाई करने के बाद मुंबई की दो कंपनियां- लार्सन एंड टर्बो लिमिटेड और टाटा प्रोजेक्ट्स ने बुधवार को वित्तीय बोलियां (फाइनेंशियल बिड्स) जमा कराई हैं। कुल तीन कंपनियों ने टेक्निकल राउंड क्वालिफाई किया था, लेकिन सिर्फ दो ने ही फर्म्स फाइनेंशियल बिड्स जमा कराए। कंपनियों को बुधवार तक फाइनेंशियल बिड्स जमा कराने थे। एक सरकारी आधिकारिक सूत्र ने बताया, पहले राउंड में सिर्फ तीन कंपनियों ने प्री-क्वालिफाई किया था और सिर्फ दो ने ही बिड्स आज जमा कराए। नए संसद भवन के लिए दोनों कंपनियों में से, टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड ने 861.90 करोड़ और लार्सन एंड टर्बो लिमिटेड ने 865 करोड़ रुपये की बोली लगाई है। अधिकारी ने बताया कि कुछ हफ्तों में अंतिम रूप से कंपनी का चयन किया जाएगा।

दिल्ली में कोरोना मामलों में वृद्धि जारी, 4473 नए मामले

नयी दिल्ली, एजेंसी। राजधानी में बुधवार को कोरोना वायरस संक्रमण के 4000 से अधिक मामले फिर सामने आये जिससे संक्रमितों की संख्या सवा 2.30 लाख से अधिक हो गयी। चिंता की बात यह भी है कि निषिद्ध क्षेत्रों में भी बढ़ोतरी जारी है। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से आज जारी आंकड़ों के अनुसार रिकॉर्ड 4,473 मरीजों के सामने आने से राजधानी में संक्रमितों की संख्या 2,30,269 हो गई। इस दौरान 3,313 और मरीजों के स्वस्थ होने से अब तक कुल 1,94,516 लोग कोरोना वायरस को मात दे चुके हैं। इसी अवधि में कोरोना संक्रमण से 33 और मरीजों की मौत होने से इस महामारी से मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 4,839 हो गयी है। दिल्ली में पिछले 24 घंटों में रिकार्ड 62,593 जांच की गईं और इसमें पॉजिटिव दर 7.15 प्रतिशत रही। यहां वायरस के कुल 23,09,578 नमूनों की जांच की जा चुकी है। राजधानी में प्रति 10 लाख पर जांच का औसत 1,21,556 है। दिल्ली में कुल जांच में पाजिटिव दर 9.97 प्रतिशत पाई जा रही है। राजधानी में कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या 1,127 और बढ़ कर 30,914 हो गयी जो मंगलवार को 29,787 थी। इनमें से होम आइसोलेशन में 17,324 हैं। दिल्ली में मृत्यु दर 2.1 प्रतिशत है। संक्रमण के बढ़ते प्रकोप की रोकथाम के प्रयास में निषिद्ध क्षेत्रों की संख्या आज 77 और बढ़कर 1,637 हो गयी जो मंगलवार को 1,560 थी। गौरतलब है कि राजधानी में पिछले दो दिनों से चार हजार से अधिक मामले सामने आ रहे हैं।

चीन से तनाव के बीच सरकार की विपक्ष संग बैठक शुरू

राजनाथ सिंह, गुलाम नबी आजाद समेत कई नेता मौजूद

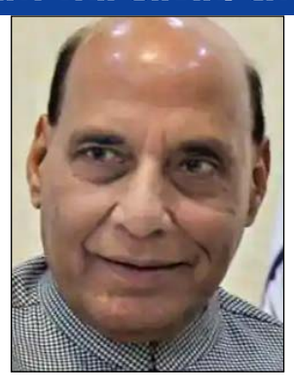

नई दिल्ली, एजेंसी। लद्दाख में भारत-चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर जारी तनाव के बीच केंद्र सरकार बुधवार शाम को विपक्षी दलों के साथ अहम बैठक कर रही है। हालांकि, इस बैठक में संसद के मॉनसून सत्र को सुचारू ढंग से चलाने की रणनीति पर चर्चा होनी है, लेकिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति के कारण बैठक काफी अहम मानी जा रही है। इस बैठक में राजनाथ सिंह, पीयूष गोयल, थावरचंद गहलोत, प्रह्लाद जोशी, गुलाम नबी आजाद, आनंद शर्मा और टी शिवा जैसे सांसद शामिल हैं। बैठक शुरू होने से पहले, इसके बारे में जानकारी रखने वाले लोगों का कहना था कि इस बैठक में कौन से मुद्दे उठाए जाएंगे, इसपर फैसला नहीं हुआ है। सरकार से उम्मीद की जा रही है कि वह प्रमुख विधेयकों को जल्द पारित कराने के लिए विपक्ष से मदद मांगेगी, लेकिन विपक्ष भारत-चीन सीमा स्थिति और अर्थव्यवस्था की स्थिति पर बहस कराने की मांग लगातार कर रहा है। संसद के मॉनसून सत्र के तीसरे दिन बुधवार को, कांग्रेस के राज्यसभा सांसद आनंद शर्मा ने राज्यसभा में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर चीनी सेना की घुसपैठ और सैन्य गतिरोध पर एक छेटी अवधि की चर्चा का नोटिस दिया। भारत-चीन के बीच सीमा गतिरोध पर केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को लोकसभा में जवाब दिया था। राजनाथ सिंह ने कहा था कि हमारे जवानों के हौसले पूरी तरह से बुलंद हैं और हम किसी भी हालात से निपटने के लिए तैयार हैं। रक्षा मंत्री ने बताया था कि चीन ने सीमा पर गोला-बारूद इकट्ठा कर लिया है, लेकिन हमारी सेना भी तैयार है। हमारे जवान देशवासियों को सुरक्षित रख रहे हैं। उन्होंने कहा, किसी को भी हमारे सीमा की सुरक्षा के प्रति हमारे दृढ़ निश्चय के बारे में संदेह नहीं होना चाहिए।

पाकिस्तान की नेवी ने भारत के समुद्री इलाके में घुसकर 45 मछुआरों को अगवा किया, 8 बोट भी ले गए

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारत और चीन के बीच जारी तनाव के बीच पाकिस्तान की तरफ से भी भड़काने वाली हरकत की गई। बुधवार को पाकिस्तान नेवी ने गुजरात से लगी भारतीय जल सीमा में घुसकर मछुआरों को निशाना बनाया। 8 बोट में सवार सभी 45 मछुआरों को अपने साथ ले गए। इनमें 6 बोट पोरबंदर की और 2 वेरावल की थीं। जानकारी के मुताबिक, सभी मछुआरों को कराची बंदरगाह ले जाया गया है। पाकिस्तानी नेवी की इस हरकत से गुजरात के मछुआरे नाराज हैं। उन्होंने केंद्र सरकार से दखल की मांग की। पाकिस्तान की नेवी की पकड़ में आने से बचे मछुआरों ने बताया कि वे भारतीय जल सीमा में ही मछलियां पकड़ रहे थे। इसी दौरान पाकिस्तानी नेवी ने उनके साथियों को बंधक बना लिया और अपने साथ ले गए। गुजरात की लंबी समुद्री सीमा पाकिस्तान से लगती है। पाकिस्तान की इस हरकत पर इंडियन कोस्ट-गार्ड भी सतर्क हो गए हैं। पाकिस्तान कोस्ट गार्ड ने इसी तरह बीती 17 फरवरी को भी सौराष्ट्र के 17 मछुआरों को उनकी 3 नावों के साथ बंधक बना लिया था। फिलहाल, ये सभी कराची की जेल में बंद हैं। पाकिस्तानी नेवी का दावा था कि ये मछुआरे पाकिस्तान की जल सीमा में घुस आए थे। इससे पहले 13 फरवरी को भी पाकिस्तान कोस्ट गार्ड ने भारतीय मछुआरों पर फायरिंग की थी। हालांकि फायरिंग में कोई हताहत नहीं हुआ था।

> पाकिस्तान की इस हरकत पर इंडियन कोस्ट-गार्ड भी सतर्क हो गए हैं

'युवा शक्ति' और 'ज्ञान शक्ति' मिलकर भारत को वैश्विक शक्ति बनाएंगे: डॉ निशंक

नयी दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा है कि देश के युवाओं की शक्ति एवं नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रस्तावित प्रावधानों से मजबूत होने वाली शिक्षा भारत को एक वैश्विक शक्ति बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। डॉ निशंक ने बुधवार को यहाँ राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी), राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) तथा नेहरु युवा केंद्र संगठन (एनवाईकेएस) के समन्वयकों की बैठक को संबोधित करते हुए कहा,फभारत 35 वर्ष से कम आयु की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या वाला सबसे युवा देश है। हम जिस चौथी औद्योगिक क्राति की बात करते हैं वो युवाओं पर ही निर्भर करती है। इतनी बड़ी युवा जनसंख्या और सेवा क्षेत्र में हमारा प्रभुत्व होने के कारण (जिसमें कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 55 प्रतिशत हिस्सा है) ज्ञान हमारी अर्थव्यवस्था का प्रमुख कारक बन जाता है। इस ज्ञान की शक्ति को पाने के लिए ही हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसा महायज्ञ, महाअनुसंधान आरंभ किया है। आप लोगों की 'युवा शक्ति' और यह 'ज्ञान शक्ति' जब मिल जाएंगे तब भारत को 'वैश्विक शक्ति' बनने से कोई रोक नहीं पायेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में हम एक ऐसा विजन देश के समक्ष लेकर आए हैं जो एक नए, शिक्षित, सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेगा। केंद्रीय मंत्री ने इस बैठक के माध्यम से अभिभावकों, शिक्षकों, स्कूलों, छात्रों, शिक्षाविदों, एनसीसी, एनएसएस, एनवाईकेएस जैसे सगठनों, स्वंसेवी सस्थाओं आदि का आवाहन किया और उनसे कहा कि वो इस नीति के क्रियान्वयन हेतु सुझाव दें, चर्चा करें और राष्ट्रीय शिक्षा नीति को जमीनी स्तर तक पहुँचाने के लिए जागरूकता अभियान एवं शिक्षा संवाद की शुरुआत करें। डॉ निशंक ने हर युवक, छात्र, शिक्षक एवं संस्था को इस नीति का ब्रांड एंबेसडर बताते हुए कहा कि आज का यह शिक्षा संवाद और युवा संवाद एक राष्ट्रीय संवाद है।

भारत-चीन तनाव चरम पर

सेना लद्दाख में बोफोर्स तोपें तैनात करने की तैयारी कर रही

नयी दिल्ली, एजेंसी। पूर्वी लद्दाख में चीन की घुसपैठ की कोशिशों के चलते भारत-चीन के बीच तनाव चरम पर है। इस बीच भारतीय सेना वहां बोफोर्स होवित्जर तोपें तैनात करने की तैयारी कर रही है। न्यूज एजेंसी एएनआई ने बुधवार को यह जानकारी दी। इसके मुताबिक, सेना के इंजीनियर बोफोर्स तोपों की सर्विसिंग में जुटे हैं। ये तोपें कुछ दिनों में बॉर्डर पर तैनात कर दी जाएंगी। बोफोर्स तोपें 1980 में सेना में शामिल की गई थीं। ये लो और हाई एंगल से फायरिंग कर सकती हैं। ये तोपें युद्ध जिताने में मददगार रही हैं। 1999 में पाकिस्तान के खिलाफ करगिल की जंग जिताने में भी इनकी अहम भूमिका रही थी। बोफोर्स तोपों ने बहुत ज्यादा ऊंची पहाड़ियों पर बने पाकिस्तान के बंकरों और ठिकानों को आसानी से तबाह कर दिया था। इससे पाकिस्तान की सेना को भारी नुकसान हुआ था। फॉरवर्ड लोकेशंस पर आर्मी की तैयारियों के सिलसिले में सर्विसिंग और मेंटेनेंस के काम को लेकर लेफ्टिनेंट कर्नल प्रीति कंवर ने जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वर्कशॉप में आर्मी के इंजीनियर उन हथियारों के मेंटेनेंस का ध्यान रखते हैं, जिनकी विशेष परिस्थितियों में जरूरत होती है। टेक्निकल स्टोर ग्रुप्स एक टैंक की फायरिंग पिन से लेकर इंजन तक हर चीज मुहैया करवाते हैं। मोबाइल स्पेयर्स वैन के जरिए हम फॉरवर्ड इलाकों में टेक्नीशियंस को कंपोनेंट पहुंचाते हैं। लद्दाख में भारत-चीन के बीच मई से तनाव बना हुआ है।

लॉकडाउन के बाद से अगस्त तक रेलवे का यातायात राजस्व 42 प्रतिशत घटा

नयी दिल्ली, एजेंसी। लॉकडाउन के बाद से अगस्त तक के दौरान मालवहन एवं यात्री परिवहन से होने वाली रेलवे की आमदनी में 42 फीसदी से अधिक की गिरावट आयी है। रेल मंत्री पीयूष गोयल ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में आज लोकसभा को बताया कि कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में लगाये गये लॉकडाउन के बाद रेलवे की यात्री परिवहन सेवाएं रोकनी पड़ी। बाद में सीमित संख्या में ट्रेनें चलाई गई हैं। लॉकडाउन के बाद से अगस्त तक यात्रियों की संख्या पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में मात्र 1.27 प्रतिशत रही। इस दौरान मालवहन पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 86.6 प्रतिशत रहा। श्री गोयल ने बताया इस कारण रेलवे का यातायात से प्राप्त राजस्व अगस्त के अंत तक घटकर 41,844.31 करोड़ रुपये रह गया जो पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 42.3 प्रतिशत कम है। उन्होंने बताया कि अब धीरे-धीरे ट्रेन सेवाएँ शुरू की जा रही हैं। गत 12 मई से 15 जोड़ी राजधानी स्पेशल ट्रेनें चलाई गई हैं। इसके बाद 01 जून से 100 जोड़ी और 12 सितंबर से अन्य 43 जोड़ी स्पेशल ट्रेनें चलाई गई हैं। साथ ही 705 उपनगरीय रेल सेवाएँ भी 15 जून से शुरू की गई हैं। रेल मंत्री ने कहा कि ट्रेनें बंद होने के कारण 22 मार्च से 30 जून के बीच 1,77,59,579 टिकटों के रिफंड दिये जाने थे। इस मद में 2,381.03 करोड़ रुपये का रिफंड दे दिया गया है। अभी 855 टिकट के रिफंड दिये जाने बाकी हैं क्योंकि जिन बैंक खातों से ये टिकट बुक कराये गये थे वे खाते बंद हो चुके हैं। इन टिकटों का कुल रिफंड 10.07 लाख रुपये बनता है। आईआरसीटीसी रिफंड के लिए इन ग्राहकों से संपर्क कर रहा है।

आयुर्वेद शिक्षण व अनुसंधान संस्थान बिल आरएस में पारित

नई दिल्ली, एजेंसी। मानसून सत्र के तीसरे दिन राज्यसभा में आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान विधेयक, 2020 को हरी झंडी मिल गई है। बुधवार को उच्च सदन में चर्चा के बाद आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान विधेयक, 2020 को पारित कर दिया गया। इस विधेयक में तीन संस्थानों का विलय करने का प्रस्ताव है। जामनगर स्थित गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय परिसर में इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट टीचिंग एंड रिसर्च इन आयुर्वेद, गुलाबकुंवरबा आयुर्वेद महाविद्यालय और इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद फार्मास्यूटिकल साइंसेज के विलय पर मुहर लग गई है। अब जामनगर, गुजरात में स्थित आयुर्वेद विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान का दर्जा दिया जाएगा। राज्यसभा में आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान विधेयक पर चर्चा के दौरान सांसदों ने गिलोय से लेकर अश्वगंधा के गुणों और कोरोना काल में आयुर्वेद और हौम्योपैथ के फायदे पर चर्चा की।

योगी ने कोविड-19 के उपचार की सभी आवश्यक दवाओं की बैकअप सहित पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के दिये निर्देश

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कोविड-19 के उपचार की सभी आवश्यक दवाओं की बैकअप सहित पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि जिला चिकित्सालयों, मेडिकल कॉलेजों तथा चिकित्सा संस्थानों में औषधियों एवं ऑक्सीजन की सुचारु व्यवस्था बनायी रखी जाए। मुख्यमंत्री आज यहां लोक भवन में आहूत एक उच्चस्तरीय बैठक में अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कोविड अस्पतालों की व्यवस्थाओं को चुस्त-दुरुस्त बनाये रखने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि चिकित्सक एवं नर्सिंग स्टाफ वॉर्ड्स में नियमित राउण्ड लें। डॉक्टरों तथा पैरामेडिक्स को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया लगातार जारी रहे। मुख्यमंत्री ने कोविड चिकित्सालयों में बेड्स की संख्या में वृद्धि करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग का कार्य पूरी तेजी से संचालित किया जाए। इसके लिए सर्विलान्स टीम की व्यवस्था को और मजबूत बनाया जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि रोगियों के लिए ऑक्सीजन निर्धारित दर पर उपलब्ध हो। इसकी कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री ने जनपद लखनऊ व कानपुर नगर में उपचार व्यवस्था को और सुदृढ़ किये जाने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य तथा अपर मुख्य सचिव ग्राम्य विकास एवं पंचायतीराज जनपद लखनऊ की चिकित्सा व्यवस्थाओं की समीक्षा करें। प्रमुख सचिव स्वास्थ्य जनपद कानपुर नगर की चिकित्सा व्यवस्थाओं की समीक्षा करें। उन्होंने कहा कि कोविड संक्रमित रोगी को समय से अस्पताल में भर्ती कराते हुए इलाज प्रारम्भ किये जाने से अधिक से अधिक जीवन रक्षा की जा सकती है। इसलिए कोविड-19 के उपचार की

प्रभावी व्यवस्था को हर हाल में बनाए रखा जाए। मुख्यमंत्री ने कोविड चिकित्सालय में भर्ती मरीजों की गहन मॉनीटरिंग करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि सफलतापूर्वक उपचारित किये गये रोगियों की इलाज विधि का बारीकी से अध्ययन किया जाए। इससे अन्य मरीजों का सफल इलाज करने में मदद मिलेगी। उन्होंने अपर मुख्य सचिव चिकित्सा शिक्षा को मेडिकल कॉलेज व चिकित्सा संस्थानों में तथा अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य को जिला चिकित्सालयों में इसकी समीक्षा कराने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने कोविड-19 से सुरक्षा एवं बचाव के सम्बन्ध में लोगों को जागरूक करने की कार्यवाही को लगातार जारी रखने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि जब तक इस रोग की कोई कारगर दवा अथवा वैक्सीन विकसित नहीं हो जाती, तब तक बचाव ही सबसे अच्छा उपाय है। इसलिए कोविड-19 के सम्बन्ध में जागरूकता की कार्यवाही प्रभावी ढंग से संचालित की जाए। बैठक में मुख्यमंत्री को अवगत कराया गया कि पब्लिक एड्रेस सिस्टम के माध्यम से जनता को कोविड-19 से बचाव एवं सड़क सुरक्षा के सम्बन्ध में जागरूक करने के उद्देश्य से कार्ययोजना तैयार कर ली गयी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता को उचित मूल्य पर सब्जियां उपलब्ध कराने के लिए सभी जरूरी कदम उठाये जाएं। उन्होंने आलू, प्याज, टमाटर की जमाखोरी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि मूल्य समर्थन योजना के तहत धान की खरीद के लिए समयबद्ध ढंग से तैयारियां सुनिश्चित की जाएं। धान क्रय केन्द्रों की संख्या में वृद्धि का आकलन कर इसे लागू किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (एस0एल0बी0सी0) की बैठक में विभिन्न योजनाओं के तहत ऋण प्रदान करने की कार्ययोजना बनायी जाए। उद्यमियों, बेरोजगारों तथा अन्य पात्र लोगों को ऋण उपलब्ध कराने के जनपदवार लक्ष्यों की समीक्षा करते हुए इसकी पूर्ति सुनिश्चित की जाए। इस अवसर पर चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खन्ना, स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह, मुख्य सचिव आर0के0 तिवारी, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त श्री आलोक टण्डन, कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक सिन्हा, अपर मुख्य सचिव वित्त संजीव मित्तल, अपर मुख्य सचिव गृह एवं सूचना अवनीश कुमार अवस्थी, प्रमुख सचिव पशुपालन भुवनेश कुमार, प्रमुख सचिव स्वास्थ्य आलोक कुमार, सचिव मुख्यमंत्री आलोक कुमार, सूचना निदेशक शिशिर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

युवाओं को रोजगार मिले आईएएस की परीक्षा में हिंदी को बढ़ावा मिलेः शिवपाल

लखनऊ, संवाददाता। समाजवादी पार्टी की साइकिल छोडकर अलग पार्टी बनाने वाले प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया के नेता शिवपाल सिंह यादव ने बुधवार की सुबह प्रसपा प्रदेश कार्यालय से साइकिल सन्देश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान तमाम नेता और पदाधिकारी मौजूद रहे। साइकिल सन्देश यात्रा पहले दिन लखनऊ से उन्नाव तक जाएगी। इस मौके पर शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि युवाओं को रोजगार मिले, आईएएस की परीक्षा में हिंदी को बढ़ावा मिले। सरकार कोरोना के समय में प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्रों को मौके दे ये हमारी साइकिल यात्रा से संदेश निकलेगा। उन्होंने कहा यूपी में अब समाजवादियों की सरकार बनेगी। अखिलेश यादव को जो कहना था वो मैंने कह दिया। लेकिन उनके समर्थन का बहुत दिनों तक इंतजार नहीं करूंगा। उन्होंने कहा सभी समाजवादियों को साथ आना चाहिए लेकिन हम इस इंतजार में बहुत दिनों तक नहीं रुकेंगे।

अनऐडेड प्राइवेट स्कूल एसोंसिएशन का नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर वेबिनार

वेबिनार के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समझने के लिये हुआ निजी स्कूलों का मंथन

लखनऊ, संवाददाता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताओं, बारीकियों और उसके क्रियान्वयन में आ रही जटिलताओं के लिये एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का आयोजन अनऐडेड प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में गीता गांधी किंगडन ने वेबिनार को संबोधित किया। इस अवसर पर संयुक्त शिक्षा निदेशक, डा0 सुरेन्द्र कुमार तिवारी, जिला विद्यालय निरीक्षक डा0 मुकेश कुमार सिंह तथा यूपीएसए की सचिव डा0 माला मेहरा उपस्थित थी। अनऐडेड प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समझने के लिये यह वेबिनार काफी महत्वपूर्ण है। इस वेबिनार में 174 निजी विद्यालयों के प्रबन्धकों और प्रधानाचार्यो ने भाग लिया तथा वाराणसी, सीतापुर, लखीमपुर लखनऊ सैकड़ों लोगों के द्वारा देखा गया। मुख्य वक्ता प्रोफेसर गीता गांधी ने शिक्षा नीति की प्रगतिशील प्रगति पर विस्तार से चर्चा करते हुये इसके क्रियान्वयन में शिक्षा विभाग के प्रयासों की सराहना की। संयुक्त शिक्षा निदेशक के अनुसार एनईपी ग्रामीण क्षेत्रों पर अधिक केन्द्रित है। जिला विद्यालय निरीक्षक के अनुसार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कौशल विकास, प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम आदि को थोड़ा कठिन बताया। वही यूपीएसए की सचिव डा0 माला मेहरा ने ग्रामीण और निजी स्कूलों के साथ प्रश्नोत्तर के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिये लोगों की शंकाओं का त्वरित समाधान किया। इस वेबिनार का निष्कर्ष यही निकला कि सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिये निजी स्कूलों के साथ भागीदारी की उम्मीद कर रही है। वेबिनार के सफल आयोजन पर अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने सभी को धन्यवाद दिया।

नशीले पदार्थ बेंच रही महिला गिरफ्तार 45 पुड़िया गांजा व स्मैक बरामद

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश में फैले नशे के कारोबार पर रोक लगाने के लिए अब राजधानी लखनऊ पुलिस ने कमर कस ली है। नशे के कारोबार में संलिप्त एक महिला पकड़े जाने के बाद पुलिस ने शहर में चौकसी बढ़ा दी है। बुधवार राजधानी लखनऊ के बाजारखाला इलाके में पुलिस ने एक खास ऑपेरशन के तहत नशे के कारोबारियों पर शिकंजा कस रही है। यूथ को नशे के दलदल में धकेलने वाले गिरोह पर पुलिस शख्त दिखाई दे रही है। बाजारखाला पुलिस ने नशे का कारोबार करने वाली महिला को गिरफ्तार कर लिया है। महिला आरोपी के कब्जे से कुल 45 पुड़िया गांजा, और 47 ग्राम स्मैक व 840 रूपए की नकदी पुलिस ने बरामद कर लिया है। अपराध शाखा की पुलिस टीम ने अवैध रूप से अपने कब्जे में गांजा पत्ती बेचने वाली महिला आरोपी को लखनऊ के खालाबाजार से गिरफ्तार किया है। महिला आरोपी की पहचान नहीं हो पाई है। आरोपी महिला ने पूछताछ में बताया कि उसने गांजा अपने एक साथी से खरीदी थी। जिसे वह नशा करने वालों को बेचती है। फिलहाल बाजारखाला पुलिस ने नशे के कारोबार में शामिल महिला को जेल भेज दिया है, पुलिस पूरे मामले की जांच और आगे की कार्रवाई में जुट गई है।

नदवातुल उलमा भी दे रहा बच्चों को ऑनलाइन तालीम

लखनऊ, संवाददाता। कोरोना संकट को देखते हुए नदवातुल उलमा भी दूसरे मुल्कों से आ रहे नौजवानों को ऑनलाइन तालीम दे रहा है। थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, बांग्लादेश, ब्रोनाई, अफ्रीका, अफगानिस्तान समेत अन्य कई मुल्कों के बच्चों को अपना वतन छोड़ने की जरूरत नहीं है। उन्हें घर बैठे यह सुविधा मिल रही है। नदवातुल उलमा के सहायक रजिस्ट्रार डाघ् हारून राशिद ने आईएएनएस से बताचीत में कहा कि कोरोना संकट को देखते हुए हमने अपने यहां ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की शुरूआत अगस्त से की है। कोरोना का असर बच्चों की पढ़ाई पर न पड़े इसके लिए जूम ऐप के माध्यम से ऑनलाइन क्लासेज चल रही हैं। इसमें करीब 2000 बच्चों को लाभ मिल रहा है। कक्षाएं ग्रुपों के माध्यम से चलाई जा रही हैं। दूसरे मुल्कों से तकरीबन 125 बच्चे थे। लेकिन कोरोना संकट देखते हुए सब अपने मुल्क वापस चले गये। उन्हें ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति को अपनाते हुए प्रधानाचार्य सईदुर्रहमान के दिशा निर्देशन में यह ऑनलाइन कक्षाएं चल रही है। कोरोना संकट के कारण जो छात्र परीक्षाओं में शामिल न हो सके उनकी परीक्षाएं भी ऑनलाइन माध्यम से कराईं जानी है। वह घर बैठकर परीक्षा दे सकेंगें। डिग्री के लिए भी बच्चे ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

पूर्व डीएम सुल्तानपुर ऑडियो-एमएलए लम्भुआ का अनुचित दवाब

लखनऊ, संवाददाता। एक्टिविस्ट डॉ नूतन ठाकुर ने उन्हें प्राप्त हुए पूर्व डीएम सुल्तानपुर सी इंदुमती तथा इलाहाबाद के पत्रकार सौरभ सोमवंशी की कथित बातचीत के आधार पर थाना कोतवाली नगर, सुल्तानपुर में दर्ज मु0अ0स 0716द्2020 धारा 471, 468, 467, 420, 406 आईपीसी में ठोस कार्यवाही की मांग की है,डीजीपी एचसी अवस्थी को भेजे अपने पत्र में नूतन ने कहा कि यह मुकदमा इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच में दायर पीआईएल के बाद डीएम सुल्तानपुर द्वारा गठित जाँच समिति की आख्या के आधार पर दर्ज किया गया. मुकदमे के अनुसार आरोपी संतोष कुमार सिंह ने कई विद्यालयों के नाम फर्जी तरीके से मान्यता प्राप्त कर सांसदध्विधायक निधि का रु0 32.70 लाख गबन कर लिया,इस संबंध में बातचीत में सुश्री इंदुमती ने फोन पर बताया था कि मामले में एमएलए लम्भुआ देवमणि द्विवेदी द्वारा विशेष रूचि लेकर अभियुक्त को बचाने का प्रयास किया जा रहा है तथा विवेचना में गलत दवाब बनाया जा रहा है. सुश्री इंदुमती ने कहा कि श्री द्विवेदी इसके अतिरिक्त भी कई मामलों में गलत दवाब बनाते रहे हैं,नूतन ने इस तथ्यों के आधार पर बिना विद्यालय के अस्तित्व के ही सांसद, विधायक निधि देने के संबंध में उन सांसद, विधायक की भूमिका की जाँच की मांग की है. साथ ही उन्होंने विवेचना में बेसिक शिक्षा, समाज कल्याण, अल्पसंख्यक विभाग, पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, और डीआरडीए से जुड़े तमाम अन्य गबन आदि के मामले सम्मिलित करते तथा इस अवधि के मुख्य विकास अधिकारी, बेसिक शिक्षा अधिकारी, परियोजना निदेशक, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के अधिकारी और जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी आदि भी भूमिका को देखे जाने की मांग की है,उन्होंने इस मामले में देवमणि द्विवेदी तथा अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा दिए जा रहे कथित अनुचित दवाब के संबंध में भी जाँच किये जाने की मांग की है।

सीमा पर भारत-चीन तनाव पर बोलीं मायावती-हमें भरोसा है सरकार चीन को करारा जवाब देती रहेगी

लखनऊ, संवाददाता। पिछले कई दिनों ने सीमा पर भारत और चीन के बीच तनाव जारी है। इस मुद्दे को लेकर जहां कांग्रेस केंद्र सरकार की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर रही है वहीं दूसरी तरह बसपा सुप्रीमो मायावती सरकार के साथ खड़ी दिखाई दे रही हैं। मायावती ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि चीन के साथ सीमा विवाद को लेकर जारी संघर्ष व तनाव से देश में उत्सुकता व चिन्ता स्वाभाविक है। मायावती ने ट्वीट कर कहा, 'चीन के साथ सीमा विवाद को लेकर जारी संघर्ष, तनाव व तैनाती आदि को लेकर देश में उत्सुकता व चिन्ता स्वाभाविक है, जिसको लेकर सरकार ने संसद में कल बयान भी दिया है। बीएसपी को भरोसा है कि भारत सरकार देश की अपेक्षा के अनुरूप चीन को करारा जवाब देती रहेगी। बीएसपी सरकार व सेना के साथ।

शिया वक्फबोर्ड के पूर्व चेयरमैन वसीम रिजवी हुए कोरोना पॉजिटिव

लखनऊ, संवाददाता। शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व चेयरमैन वसीम रिजवी कोरोना पॉजिटिव हैं। जिसके बाद से रिजवी होम क्वारंटाइन में हैं। इस पर वसीम रिजवी ने कहा कि कट्टरपंथी मुल्लाओं मेरे कोरोना संक्रमति होने पर खुश बिलकुल न हों। हम कोरोना को हराकर जल्द ही वापस लौटेंगे। वसीम रिजवी ने बताया कि 15 सितंबर को वह रामपुर गए थे। यहां वह रामपुर कोर्ट में अपने खिलाफचल रहे एक मुकदमे की जांच में सहयोग करने गए थे। वहां से लौटने के बाद घर पहुंचे तो यहां फुर्सत के पल में खाना बनाना शुरू किया। उन्होंने महसूस किया कि खाने के मसालेदि की महक उन्हें नहीं आ रही है। पता चला कि उनकी सूंघने की शक्ति पूरी तरह चली गई है। वसीम रिजवी ने बताया कि इसके बाद लखनऊ के चरक अस्पताल में उन्होंने जांच कराई और रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद उन्होंने अपने संपर्क में आए सभी लागों से जांच कराने को कहा। उन्होंने कहा कि अभी मुझे संक्रमण के दौरन सिर्फसिर और पेट में दर्द है, सूंघने की शक्ति खत्म हो गई है, इसीलिए मैं अभी अस्पताल में डॉक्टरों की सलाह के बाद एडमिट नहीं हो रहा हूं। अगर आवश्यकता पड़ी तो भर्ती हो जाऊंगा।

फीस के नाम पर अवैध उगाही, स्कूल परिसर में ही उपवास पर बैठे अभिभावक

लखनऊ, संवाददाता। सरकार की मनाही के बावजूद तमाम प्राइवेट स्कूल कोरोना काल में अभिभावकों से फीस के नाम पर अवैध उगाही से बाज नहीं आ रहे हैं। पिछले कई महीनों से स्कूल बंद हैं, फिलहाल ऑनलाइन ही शिक्षण कार्य चल रहा है। लेकिन निजी स्कूल अभिभावकों से शिक्षण के अलावा अन्य तमाम तरह के शुल्क जोड़कर मोटी फीस जमा करने का दबाव बना रहे हैं। लखनऊ-हरदोई रोड स्थित आम्रपाली योजना में लखनऊ पब्लिक स्कूल की ऐसी ही उगाही के खिलाफतमाम अभिभावक स्कूल परिसर में ही एक दिन के उपवास पर बैठे गए हैं। लखनऊ अभिभावक संघ के बैनर तले चल रहे सांकेतिक विरोध प्रदर्शन में तमाम अभिभावकों ने स्कूल पर मनमानी उगाही करने का आरोप लगाते उपवास रखा है। अभिभावकों ने स्कूल प्रशासन से अपील की है कि 'शिक्षण शुल्क जमा करेंउबाकी शुल्क क्षमा करें।' एक दिवसीय उपवास में लखनऊ अभिभावक संघ के एसएन सिंह, विनीत शुक्ला (बीनू), महेन्द्र सिंह, अजीत सिंह, अधिवक्ता अरुण कुमार मिश्रा, विनोद कुमार दूबे, कृष्ण कुमार सोनी सहित तमाम अभिभावक शामिल हैं।बता दें कि कोविड-19 और फिर लॉकडाउन के कारण लोगों की नौकरियां और कारोबार बुरी तरह प्रभावित हुए हैं।

उपभोक्ता परेशान, बैंक कर्मचारी बना रहे सर्वर का बहाना, बैंक में हंगामा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ में स्थित बैंक शाखाओं में कर्मचारियों की मनमानी लगातार जारी है। बैंक कर्मचारी सर्वर का बहाना बनाकर ग्राहकों की परेशानियां दूर करने की बजाय उनका उत्पीड़न कर रहे हैं और अभद्रता भी कर रहे हैं। ताजा मामला हजरतगंज थाना क्षेत्र का है। यहां जॉपलिंग रोड स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा के बाहर सुबह उपभोक्ताओं ने बैंक के खिलाफजमकर नारेबाजी की। उपभोक्ताओं का कहना था कि उन्हें बैंक में घुसने नहीं दिया जा रहा है। बैंक कर्मचारी 2 महीने से सर्वर ना होने का बहाना बनाकर उन्हें भगा रहे हैं। बैंक में उपभोक्ताओं ने बताया कि वह दूर-दूर से अपना किराया और समय बर्बाद करके शाखा में महीने भर से चक्कर काट रहे हैं लेकिन कोई सहायता नहीं मिल रही है। किसी को बच्चे की फीस जमा करनी है तो किसी को पैसा निकालना है, किसी को पैसा जमा करना है तो किसी को अपनी पासबुक अपडेट करानी है।

आज गोपाल दास नीरज की स्मृति में होगा सार्वजनिक भंडारा

लखनऊ, संवाददाता। श्राद्ध पक्ष की चतुर्दशी पर अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए पितरों के लिए पिंडदान और तर्पण कार्य किया गया। दूसरी ओर सृजन संस्था की पहल पर जरूरतमंदों को निःशुल्क श्राद्ध भोज वितरित किया जा गया। इस क्रम में प्रकाश चंद्र श्रीवास्तव और स्मिता ने अपने पिता स्वर्गीय गुलाब चंद्र की स्मृति में सार्वजनिक भोज कराया। इस योजना की लोकप्रियता का आलम यह है कि बुधवार को पांच भंडारे बुकिंग के आधार पर हुए। इस क्रम में अनुभा सिन्हा ने अपने पति स्वर्गीय संजय सिन्हा और बलवीर प्रसाद सिन्हा ने अपनी पत्नी स्वर्गीय बीना की स्मृति में निःशुल्क भोजन वितरित करवाया। बाल नृत्यांगना रिजा सिद्दीकी ने अपनी नानी स्वर्गीय छाया पॉल की प्रथम पुण्यतिथि पर सार्वजनिक भोजन वितरण का सेवाकार्य करवाया। एम.आर. एस.पी. सेवा समिति की ओर से स्वर्गीय छायारानी पात्रा और स्वर्गीय रश्मि पात्रा की स्मृति में जरूरतमंदों को भरपेट भोजन करवाया गया। इस अवसर पर निःशुल्क मास्क भी बांटे गए। दूसरी ओर सृजन फाउण्डेशन की ओर से पहली बार मशहूर फिल्मी गीतकार और प्रतिष्ठित कवि गोपालदास सक्सेना श्नीरजश् का श्राद्ध भोज 17 सितम्बर को वितरित किया जाएगा। श्रद्धेय गोपाल दास नीरज ने जानकीपुरम के सृजन संस्था की ओर से संचालित स्नेहधरा वृद्धाश्रम में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुके हैं। ऐसे में पहली बार उनकी पुण्य स्मृति में गुरुवार 17 सितम्बर को स्नेहधरा वृद्धाश्रम की ओर से सार्वजनिक भोज की सेवा दी जा रही है। स्नेहधरा वृद्धाश्रम के निदेशक अरुण प्रताप सिंह ने बताया कि 4 जनवरी 1925 को जन्में और 19 जुलाई 2018 को मृत्यु को प्राप्त हुए पद्मभूषण और फिल्म फेयर पुरस्कार से अलंकृत वरिष्ठ साहित्यकार गोपाल दास नीरज के बेटे मिलन प्रभात की इच्छा से सार्वजनिक भोज का वितरण किया जाएगा। सृजन फाउंडेशन की ओर से संचालित स्नेहधरा वृद्धाश्रम के माध्यम से संचालित कोई न सोये भूखे पेट अभियान के अंतर्गत सृजन सेवा रथ अम्मा-बब्बा की रसोई के माध्मय से निराश्रित जनों के लिए निःशुल्क और अन्य लोगों के लिए श्रम सेवा के लिए 10 रुपये सहायतार्थ राशि में चावल-छोले, राजमा, कढ़ी, हलवा, बूंदी, खीर, सलाद उपलब्ध कराया जा रहा है।

योगी ने पेंशन के 1,311 करोड़ रुपये लाभार्थियों के खाते में ऑनलाइन भेजी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को वृद्धावस्था, दिव्यांगजन व कुष्ठावस्था पेंशन के 86,95,027 लाभार्थियों के खाते में पेंशन की त्रैमासिक किस्त 1,311.05 करोड़ रुपये ऑनलाइन भेजी। इस दौरान वृद्धावस्था पेंशन के 49,87,054 लाभार्थियों को 748.06 करोड़ व दिव्यांगजन पेंशन के 10,90,436 लाख लाभार्थियों को 163.57 करोड़, 26,06213 निराश्रित महिलाओं को 390.93 करोड़, कुष्ठावस्था पेंशन योजना के 11,324 लाभार्थियों को 8.49 करोड़ तीन महीने - जुलाई, अगस्त व सितंबर की पेंशन दी गई। प्रत्येक लाभार्थी के खाते में 1500-1500 रुपये भेजे गए। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी ने पेंशन लाभार्थियों से बातचीत कर उनकी समस्याओं को भी जाना।

सामाजिक पेंशन योजनाओं के वितरण कार्यक्रम में लाभार्थियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जुलाई, अगस्त, सितंबर माह की पेंशन एक साथ इन सभी लाभार्थियों के खाते में जा रही है। हमारी सरकार ने नर सेवा को नारायण सेवा के साथ जोड़ कर देखा है। यदि हम किसी निराश्रित या दिव्यांगजन का थोड़ा भी सहयोग करते हैं तो यह बहुत ही पवित्र कार्य है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि सरकार की प्रत्येक योजना का लाभ सभी नागरिकों तक पहुंचे।उन्होंने कहा कि यह राशि इन सभी लाभार्थियों को उनके सामान्य भरण-पोषण के लिए दी जाती है। यह केंद्र व राज्य सरकार की योजना का एक भाग और शासन की लोक कल्याणकारी योजनाओं का भी एक हिस्सा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, हम सबको प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करना चाहिए, जिनके कारण आज प्रत्येक लाभार्थी के खाते में सीधे धनराशि पहुंच रही है और बड़ी संख्या में लाभार्थी शासन की योजनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि यदि कोई लाभार्थी शासन की योजनाओं से वंचित रह गया है तो उनको चिन्हित करते हुए उन तक योजनाओं का लाभ पहुंचाएं। योगी ने कहा कि यह कार्य निरंतर चल रहा है, जिससे कोरोना काल में किसी भी व्यक्ति के सामने भोजन का संकट न आए। जिनके पास राशन कार्ड नहीं है, उनके लिए तत्काल राशन कार्ड बनाकर राशन उपलब्ध करवाने के भी निर्देश दिए गए हैं।

भोले भाले लोगो का एटीएम बदल कर बैंक एकाउन्ट से पैसा उड़ाने वाले दो जालसाज पकड़े गए

लखनऊ, संवाददाता। एटीएम मशीनो पर पैसे निकालने के लिए आने वाले बुजुर्गो और कम पढ़े लिखे लोगो की पैसे निकालने मे मदद करने के बहाने उनका पिन नम्बर चुरा कर एटीएम कार्ड को धोखे से बदल कर बैंक एकाउन्ट से पैसा निकालने व एटीएम से खरीदारी करने वाले दो शातिर ठगो को गोमती नगर पुलिस ने गिरफ्तार करने मे कामयाबी हासिल की है। गोमती नगर पुलिस व डीसीपी पूर्वी की सर्विलांस की संयुक्त टीम द्वारा आज दो शातिर जालसाजो कबीरपुर गोसाईगंज के रहने वाले अंकुल वर्मा व सुरियामऊ गोसाईगंज के रहने वाले राज प्रताप सिंह उर्फबाबू छपरी को गिरफ्तार किया गया। दो दिन पूर्व आसरेपुरवा गोमती नगर विस्तार के रहने वाले बुजुर्ग नारायण सिंह धौनी द्वारा गोमती नगर थाने मे मुकदमा दर्ज कराया गया था। मुकदमे की

जॉच जब पुलिस ने शुरू की तो सीसीटीवी फुटेज ने इन दोनो जालसाजो की गिरफ्तारी मे पुलिस की काफी मदद की। इन्स्पेक्टर गोमती नगर अशोक कुमार सरोज ने बताया कि गिरफ्तार किए गए अंकुल और बाबू छपरी ने नारायण सिंह धौनी का एटीएम मशीन पर पैसे निकालने मे मदद के बहाने पिन चुराने के बाद धोखे से उनका एटीएम कार्ड बदल कर करीब 50 हजार रूपए उनके खाते से निकाले और उनके एटीएम कार्ड से कई बार खरीदारी भी की थी उन्होने बताया कि गिरफ्तार किए गए दोनो ठग काफी शातिर किस्म के ठग है और इन लोगो ने इस तरह की एक दर्जन से ज्यादा घटनाए अन्जाम देने की बात पुलिस के सामने कुबूल की है । पुलिस के अनुसार ये दोनो ठग एटीएम मशीनो के आसपास रहते थे जब कोई बुजुर्ग या कम पढ़ा लिखा व्यक्ति एटीएम मशीन पर पैसे निकालने के लिए आता था तब ये लोग उस व्यक्ति के पीछे खड़े रह कर चुपके से उसका पिन नम्बर देख लिया करते थे और पैसे निकालने मे मदद करने के बहाने उसका एटीएम कार्ड बदल लिया करते थे उस व्यक्ति के जाने के बाद उसी के एटीएम कार्ड से पैसा निकालते थे और खरीदारी भी करते थे। इन्स्पेक्टर गोमती नगर ने बताया कि अभी तो इन जालसाजो के द्वारा एक दर्जन से ज्यादा वारदाते अन्जाम दिए जाने की बात पता चली है पता लगाया जा रहा है कि इन लोगो के और कितने साथी है और इन लोगो ने अब तक कितनी वारदातो को अन्जाम दिया है।

एलडीए ने अलीगंज क्षेत्र में स्वीकृत मानचित्र के विपरीत किये जा रहे निर्माण को सील किया

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष शिवाकान्त द्विवेदी ने लखनऊ शहर में हो रहे अवैध निर्माणों के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने हेतु प्रवर्तन विभाग के अधिशासी अभियन्ताओं को दिये गये सख्त निर्देशों के अनुपालन में आज कार्यवाही की गयी, विजय लक्ष्मी कौल पत्नी स्व. आदिल चन्द्रा कौल आदि ने भूखण्ड संख्या बी-1/62, सेक्टर-एच, अलीगंज में स्वीकृत मानचित्र से अधिक विचलन किये जाने पर अवैध निर्माण के विरूद्ध वाद संख्या 330/2020 योजित किया गया। योजित वाद में विहित प्राधिकारी ऋतु सुहास द्वारा दिनांक 05.09.2020 को सील किये जाने के आदेश दिये जाने पर अधिशासी अभियन्ता-प्रवर्तन, जोन-4 कमलजीत सिंह के नेतृत्व में अवर अभियन्ता सुभाष शर्मा तथा क्षेत्रीय थाना पुलिस बल व प्राधिकरण पुलिस बल की सहायता से सील किया गया।

छुट्टी के बाद चेकिंग व तलाशी पर भड़कीं स्टाफनर्स, जमकर हुआ हंगामा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के एसजीपीजीआई में बीती रात छुट्टी के बाद स्टाफनर्सों की चेकिंग के बाद हंगामा खड़ा हो गया। ड्यूटी के बाद देर रात घर जा रहीं स्टाफ नर्सों को संस्थान के सुरक्षाकर्मी गाड़ी से उतारकर तलाशी लेने लगे। चेंकिंग को अपना अपमान बताकर स्टाफ नर्स सुरक्षाकर्मियों से भिड़ गईं। एसजीपीजीआई में स्टाफ नर्स एसोसिएशन की अध्यक्ष सीमा शुक्ला ने सुरक्षाकर्मियों से लिखित आदेश दिखाने को कहा तो जवानों ने ऊपर से आदेश मिलने की बात कही। सुरक्षाकर्मियों ने कहा कि संस्थान से कई बार कीमती सामान चोरी हो चुका है। इसलिए घर जाते समय सभी की चेकिंग करने का आदेश दिया गया है। इस पर स्टाफ नर्स सीमा शुक्ला सहित तमाम महिला व पुरुर्ष नर्सिंग स्टाफ ने चेकिंग में भेदभाव होने और सहयोगी स्टाफ का अपमान करने का आरोप लगाया। यह सभी नर्सें पीजीआई में बनाए गए कोविड अस्पताल में तैनात हैं। सीमा शुक्ला ने मौके पर प्रोफेसर फणीश बॉस से फोन पर बात स्टाफनर्सों की चेकिंग का विरोध करते हुए नाराजगी जताई। आरोप है कि प्रोफेसर फणीश बॉस ने सुरक्षाकर्मियों का समर्थन करते हुए सभी स्टाफ नर्स की गाड़ियां चेक कराने को कहा। संस्थान प्रशासन की इस मौखिक आदेश से स्टाफनर्सों में गुस्सा है। आरोप है कि बड़े डॉक्टरों और प्रशासनिक अधिकारियों की कोई चेकिंग नहीं होती, जबकि कई बार डाक्टर चोरी का सामान ले जाते हुए पकड़े गए हैं। सीमा शुक्ला ने कहा कि एसजीपीजीआई में छोटे डाक्टरों और स्टाफ नर्सों को शक की निगाह से देखा जा रहा है। उन्हें एक चोर की तरह ट्रीट किया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार मंगलवार देर रात जब स्टाफ नर्स संस्थान की बस में बैठकर हॉस्टल जाने लगीं तो सुरक्षाकर्मियों ने सभी नर्सों को सामान लेकर नीचे उतरने को कहा। पूछने पर बताया कि सभी की चेकिंग होगी। इस पर नर्सें भड़क उठी और सुरक्षाकर्मियों से बहस करने लगीं।

तिवारीपुर थाना की पुलिस स्कोर मिली बड़ी सफलता

■ तिवारीपुर थाने के टॉप -10 हिस्ट्रीशीटर शाहनवाज व उसके साथी को चोरी की दो बाइक असलहा व 8 मोबाइल के साथ किया गया गिरफ्तार

गोरखपुर/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जोगेंद्र कुमार के दिशा निर्देश पर अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक नगर डॉक्टर कौस्तुभ व क्षेत्राधिकारी कोतवाली बी पी सिंह व एएसपी शशांक सिंह के निर्देश में तिवारीपुर थाना प्रभारी सत्य प्रकाश सिंह ने थाने के टॉप 10 हिस्ट्रीशीटर शाहनवाज व उसके साथी को डोमिनगढ़ पुल के पास से घेराबंदी करके गिरफ्तार किया है। इनके पास से चोरी की दो मोटरसाइकिल 8 एंड्राइड मोबाइल 315 बोर का तमंचा दो जिंदा कारतूस बरामद किया गया है। घटना का खुलासा करते हुए क्षेत्राधिकारी कोतवाली बी पी सिंह व एएसपी शशांक सिंह ने बताया कि तिवारीपुर पुलिस को मुखबीर के जेडीए सूचना मिली कि थाने का टॉप 10 हिस्ट्रीशीटर अपने साथी के साथ चोरी की मौत मोटरसाइकिल व मोबाइल बेचने की फिराक में डोमिनगढ़ जाने वाला है सूचना पर विश्वास करके तिवारीपुर पुलिस ने डोमिनगढ़ पुल के पास घेराबंदी करके दो व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पूछताछ के दौरान पकड़े गए आरोपी ने अपना नाम शाहनवाज हुसैन पुत्र इल्तेजा हुसैन निवासी इस्लामचक थाना तिवारीपुर, दूसरा सलाउद्दीन उर्फ सोनू निवासी बख्तियार मोहल्ला थाना तिवारीपुर बताया है। इनके पास से दो चोरी की मोटरसाइकिल 315 बोर का तमंचा दो जिंदा कारतूस और 8 मोबाइल बरामद हुआ है। क्षेत्राधिकारी कोतवाली बी पी सिंह ने बताया कि शाहनवाज के ऊपर तिवारीपुर थाने में 17 केस पंजीकृत हैं एक काफी शातिर किस्म का अपराधी है जो दिनदहाड़े हुई लूट जैसे जघन्य अपराध करता है इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा है। गिरफ्तार करने वाली टीम में तिवारीपुर थाना प्रभारी सत्य प्रकाश सिंह, उप निरीक्षक प्रदीप कुमार पांडेय, उपनिरीक्षक गुरुप्रसाद, उप निरीक्षक विकास कुमार सिंह, उपनिरीक्षक धर्मेंद्र कुमार, उपनिरीक्षक शत्रुजीत सिंह, उप निरीक्षक प्रमोद कुमार कांस्टेबल अजहर खान कांस्टेबल सुधीर वर्मा शामिल रहे।

नियमित स्कूल ड्रेस के साथ,स्काउट गाइड का ड्रेस वितरण अनिवार्य-बीएसए

बस्ती। पूर्व माध्यमिक विद्यालय रमवापुर राजा,विकास क्षेत्र दुबौलिया के परिसर में बच्चों को स्कूल ड्रेस का वितरण किया गया,मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अरुण कुमार ने कहा कि बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में एक जैसे स्कूल ड्रेस से बच्चों में समानता की भावना बलवती होती है,स्वयं सहायता समूह द्वारा ड्रेस तैयार करवाने से ग्रामीण महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं,कहा कि पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में शासनादेश के मुताबिक एक नियमित स्कूल के साथ,एक स्काउट गाइड की वर्दी दिया जाना है, जनपदीय स्काउट शिक्षक एवं जिला उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाई स्कूल पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ कुलदीप सिंह ने नियमित स्कूल ड्रेस के साथ साथ स्काउट गाइड कब बुलबुल की वर्दी, स्वयं सहायता समूहों के द्वारा ड्रेस वितरण के निर्णय के लिये जिला प्रशासन और शासन के निर्णय की सराहना की है।

युवती की गला रेतकर हत्या बगीचे में फेंका मिला शव

गोरखपुर/ कैंपियरगंज थाना क्षेत्र के अंतर्गत ठाकुरनगर गांव में बुधवार की सुबह युवती की गला रेतकर बगीचे में फेंकी गई लाश मिली। सब्जी तोड़ने गई महिलाओं ने शव देख सूचना युवती के घरवालों को दी। युवती के गले में तीन जगह नुकीले हथियार से हमला करने के निशान मिले। पुलिस मामले की जांच कर रही है।मृतक की पहचान अनीता (18) पुत्री मुख्तार निषाद निवासी ठाकुरनगर गांव के अजगरहा टोला निवासी की रूप में हुई है। जानकारी के मुताबिक, मुख्तार निषाद फर्नीचर का काम करते हैं। चार बच्चों में दूसरे नंबर की बेटी अनीता मंगलवार को कमरे में सोई थी। रात में 12 बजे छत पर सोने चली गई। बुधवार की सुबह छह बजे गांव के घनश्याम की पत्नी सब्जी तोड़ने खेत की तरफ गई तो बगीचे में खून से लथपथ अनीता का शव देख शोर मचाते हुए घर पहुंची और घटना की जानकारी दी। खबर मिलने पर कैंपियरगंज थानेदार नवीन सिंह फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंच गए।एसएसपी जोगेंद्र कुमार ने बताया कि सर्विलांस की मदद से मामले की छानबीन की जा रही है जल्द ही घटना का पर्दाफाश कर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नेशनल एडवेंचर कैम्प में सर्व धर्म प्रार्थना का हुआ आयोजन-दर्शना पावसकर

बस्ती। नेशनल एडवेंचर यूथ कॉम्प्लेक्स गदपुरी में चल रहे नेशनल एडवेंचर कम कोविड-19 अवेयरनेस कैम्प में सर्व धर्म प्रार्थना का आयोजन किया गया,किसी भी कैम्प में सर्व धर्म प्रार्थना का आयोजन हिंदू,मुस्लिम, सिक्ख,ईसाई,बौद्ध आदि सभी धर्मों के अनुयायियों में समानता,एकता की भावना को दर्शाता है,यह विचार जॉइन्ट डायरेक्टर गाइड दर्शना पावसकर ने व्यक्त किया। इसी क्रम में मैसेंजर ऑफ पीस के कोऑर्डिनेटर गण कुलदीप सिंह,गौरव शुक्ला,अभिलाषा मिश्रा द्वारा विश्व शांति दिवस,यूट्यूब चैनल बीएसजीं इंडिया को लाईक और सब्सक्राइब करके स्काउट गाइड से जुड़ी जानकारी को साझा करने की अपील की गई। असिस्टेंट डायरेक्टर सिद्धार्थ मोहन्ती,लीडर ऑफ द कोर्स यशपाल हुड्डा,डॉ.योगेश कुमार टोंक,मोहिन्दर सिंह,जीत घोष,धनराज सैनी,गौरव शुक्ला,करन चढ्ढा,अभिलाषा मिश्रा,कुलदीप सिंह,विलकिश शेख,अभिलाषा मिश्रा,जाकिर हुसैन, रितेशनी मिश्रा,मंजूला सिंह,विशाल कुमार सरोज वाला,कन्हैया, मच्छेन्द्र नाथ,यूसुफ आदि की सहभागिता रही।

मछुआरा समाज की सच्ची हितैषी है सपा-नगीना प्रसाद साहनी

गोरखपुर/बांसगांव विधानसभा के कौडीराम के गंगा पैलेस में हुई बैठक में मछुआरा समाज द्वारा जिलाध्यक्ष नगीना प्रसाद साहनी को सम्मानित करते हुए विश्वास दिलाया गया कि निषाद समाज समाजवादी पार्टी के साथ है और 2022 में अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बनेगें जिलाध्यक्ष नगीना प्रसाद साहनी ने कहा कि भाजपा ने हमेशा मछुआरा समाज को छलने का कार्य किया इस सरकार में निषाद समाज सहित सभी समाज के लोगो का शोषण लगातार किया जा रहा है समाजवादी पार्टी हमेशा मछुआरा समाज के सम्मान की लडाई लडती रहीं हैं सपा निषाद समाज सहित सभी समाज की सच्ची हितैषी हैं कहा कि 17 जातियों के आरक्षण लागू करने के लिए सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने 10 अक्टूबर 2005 को विधानसभा में प्रस्ताव पास किया लेकिन बसपा ने 20 दिसंबर 2005 को स्टे ले लिया।और बसपा सरकार बनने पर उन्होंने सपा सरकार के फैसले को पलट दिया था पुनः सपा सरकार में पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने 17 पिछड़ी जातियों को अनुसूचित वर्ग में शामिल करने का प्रयास किया था पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने समाज के हर वर्ग के लिए काम किया था वर्तमान सरकार जनता के अधिकार को समाप्त करने में लगी है आने वाले में 2022 समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर निषाद समाज सहित सभी समाज के लोगो को उचित सम्मान मिलेगा कार्यक्रम की अध्यक्षता रामअजोर मौर्य ने किया संचालन रवि शंकर राय ने किया कार्यक्रम का संयोजन प्रभारी विधानसभा परशुराम निषाद द्वारा किया गया कार्यक्रम को जिलाध्यक्ष नगीना प्रसाद साहनी राम अजोर मौर्या परशुराम निषाद सजंय पहलवान,नंदलाल कन्नोजिया, रामप्रवेश यादव सुमन पासवान,सुरेन्द्रप्रताप यादव,श्री राम यादव ने भी सम्बोधित किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से अजय साहनी रामप्रवेश निषाद ,ज्ञानचंद साहनी,अजय कन्नोजिया,कपिलमुनि यादव, रविशंकर राय सुरेन्द्र निषाद सुनील आजाद राम अशीष निषाद धर्मेंद्र निषाद राजेश साहनी,मुखलाल साहनी,सौरभ राय ,सुर्यनाथ यादव,बिंदा सैनी,दुइजा देवी पासवान,राहुल विपिन,अभिषेक सन्नी,मृत्युंजय ,यदुवंश यादव, त्रिभुव साहनी,सीताराम गोड़, रामप्रवेश मंटू, ओमकार ओम, अरविंद भोलू,अजीत यादव,विजय,आदि लोग मौजूद रहे।

तालाब खुदाई के नाम पर लाखों का फर्जीवाड़ा अधिकारी लीपापोती में लगे

बस्ती। जिले के हरैया ब्लाक के 'खम्हरिया गंगाराम' ग्राम पंचायत में मनरेगा घोटाले का एक बड़ा मामला सामने आया है। जिसमें ग्रामीणों की बिना जानकारी में उनके निजी खेत को तालाब दिखा कर ग्राम प्रधान ने अधिकारियों की साठगांठ से करीब तीस लाख रुपए का गबन कर लिया है। खेत के मालिकों को इसका पता तब चला जब गांव में जांच करने के लिए टीम पहुंची। अब इस पूरे मामले को दबाने का प्रयास किया जा रहा है। तालाबों की हकीकत जानने के लिए जब गांव में जांच टीम पहुंची इसके बाद ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। इस घोटाले के शिकार हुए करीब 10 ग्रामीणों के होश उड़ गए। जिनके खेत को तालाब दिखा कर करीब तीस लाख रूपए का भुगतान किया गया था। इसकी जानकारी होने के बाद अब ग्रामीणों को अपने खेत की चिंता सताने लगी। ग्रामीणों ने बताया है कि उन्होंने एक स्थानीय ईंट भट्ठे को मिट्टी बेचकर अपने खेत से मामूली मिट्टी निकलवाई थी।

खाद्य विभाग ने की बड़ी कार्रवाई

❑ राज्य के लिए जारी खाद्य लाइसेंस पर, भेजे जाते थे नेपाल मसाले ❑ एसडीएम सहजनवा के निर्देश पर मिली शिकायत पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रतिमा त्रिपाठी ने की कार्रवाई

गोरखपुर/ खाद्य सुरक्षा एवं औषधि विभाग को मिल रही शिकायत के आधार पर गीडा के सेक्टर 13 में संचालित A S Food and beverages पर दूसरे देश नेपाल के लिए मसाले तैयार कर भेजे जा रहे जिस पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट/ एसडीएम सहजनवा के निर्देश पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रतिमा त्रिपाठी ने तहसीलदार सहजनवा के साथ प्रतिष्ठान पर छापा मारकर निरीक्षण की कार्रवाई की। निरीक्षण के समय प्रतिष्ठान पर हल्दी पाउडर व लाल मिर्चा पाउडर का पैकेट मिला शिकायत में पाया गया जिसके लेवल पर राज्य लाइसेंस नंबर छपा हुआ था व साथ ही फ़ॉर नेपाल भी लिखा हुआ था दोनों खाद्य पदार्थों के सैंपल संग्रहित कर जांच हेतु भेजा गया खाद्य पदार्थों के बचे संपूर्ण हल्दी पाउडर 860 किलो व लाल मिर्च पाउडर 340 किलो अनुमानित मूल्य 111000 है गोदाम में लगभग 100 बोरियों में सुखी लाल मिर्च भंडारी पाई गई जिसको विक्रेता ने लॉकडाउन के दौरान खराब हो जाना बताया उसको समुचित रूप से डिस्ट्रॉय करने का आदेश दिया गया और समुचित स्थान निर्धारित पर डिस्ट्रॉय कराया जाए। खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रतिमा त्रिपाठी ने बताया कि इसकी अनुमानित मूल्य 2.5 लाख रुपए है साथ ही विक्रेता को यह भी आदेशित किया गया है कि जब तक वह केंद्रीय लाइसेंस ना प्राप्त कर ले। खाद्य पदार्थों का निर्माण नहीं करेगा और तीन कार्य दिवस के भीतर लिखित रूप से किए गए कृत्य कार्य का स्पष्टीकरण भी विभाग के समक्ष प्रस्तुत करेगा। अन्यथा खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 में वर्णित सुसंगत धाराओं में अग्रिम विधिक कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस ने दुष्कर्म के एक आरोपी गिरफ्तार कर भेजा जेल

गोरखपुर/हरपुर -बुदहट थाना क्षेत्र के अंतर्गत पचौरी गांव के एक 16 वर्षीय किशोरी का अपहरण कर दुष्कर्म करने वाला अभियुक्त 4 वर्ष बाद पुलिस के हत्थे चढ़ ही गया । पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया। बताते चले कि 2016 में पचौरी निवासी एक 16 वर्षीय किशोरी का हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के मदरिया निवासी अशोक कुमार उर्फ गोलू पुत्र राजकुमार ने अपहरण कर दुष्कर्म किया था। पिता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा अपराध संख्या 152/16 धारा 363, 366 ,376 आई पी सी 5/6 पास्को अधिनियम से संबंधित मुकदमा दर्ज कर उसकी तलाश में जुटी हुई थी बुधवार को सुबह 9.30 बजे के करीब थानाध्यक्ष सुरेश चंद्र राव अपने हमराही कांनेस्बिल लालवचन यादव , बृजेश यादव और रामदुलारे यादव के साथ सन्दिग्ध और वार्रटियों की तलाश में गश्त पर निकले हुए थे , तभी मुखबीर ने सूचना दिया कि किशोरी के साथ दुष्कर्म करने वाला आरोपी कटघर चौराहे पर खड़ा होकर वाहन का इंतजार कर रहा है। जल्दी किया जाय तो पकड़ा जा सकता है , सूचना मिलते ही पुलिस टीम कटघर चौराहे पर पहुच गयी और मुखबीर के इशारे पर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी ने अपना जुल्म कबूल किया , पुलिस ने दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया।

कांग्रेस ने उ0प्र0 में प्रस्तावित विधानसभा उपचुनावों के लिए कसी कमर, हर सीट से आवेदन लेने के लिए बनाई हाई पॉवर कमेटी

आवेदन हेतु प्रत्येक विधानसभा के लिए अलग-अलग कमेटियों का हुआ गठन पूरी ताकत के उतरेगी उपचुनाव में कांग्रेस - अजय कुमार लल्लू

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में आगामी होने वाले उपचुनावों के मद्देनजर कांग्रेस पार्टी ने अपने संगठन के कील-कांटे दुरुस्त करते हुए, पूरी ताकत से उपचुनावों में उतरने का फैंसला लिया है। उल्लेखनीय है कि आने वाले दिनों में प्रदेश में 8 विधानसभा सीट पर उपचुनाव होने जा रहे हैं। चुनावी तैयारी के तहत हर सीट से आवेदन लेने हेतु एक हाई पॉवर कमेटी का गठन किया गया है। प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं के नेतृत्व में बनी कमेटी ही अंत में टिकट फाइनल करके उनकी घोषणा करेगी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री अजय कुमार लल्लू जी ने आज उपरोक्त कमेटियों का गठन किया है। नौगवां सादात (अमरोहा), बुलंदशहर, टुंडला (फिरोजाबाद), स्वार (रामपुर), बांगरमऊ (उन्नाव), घाटमपुर (कानपुर देहात), मल्हनी (जौनपुर) और देवरिया सदर सीट पर उपचुनाव होने है। प्रदेश अध्यक्ष श्री अजय कुमार लल्लू ने बताया कि घाटमपुर(सु0) सीट की जिम्मेदारी पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य, पूर्व मंत्री श्री आर0के0 चैधरी एवं पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री योगेश दीक्षित जी को दी गयी है। इसके अलावा मल्हनी सीट की जिम्मेदारी पूर्व विधायक श्री अजय राय, पूर्व विधायक श्री राम जियावन तथा पार्टी के महासचिव श्री मकसूद खान को सौंपी गयी है। देवरिया सदर सीट की जिम्मेदारी पूर्व विधायक श्री नदीम जावेद, पूर्व सांसद श्री बालकृष्ण चैहान व पार्टी के महासचिव श्री विश्वविजय सिंह को दी गयी है। बांगरमऊ सीट की जिम्मेदारी कानपुर कैण्ट से विधायक एवं प्रदेश उपाध्यक्ष श्री सुहैल अख्तर अंसारी, पूर्व विधायक श्री संजीव दरियाबादी और पार्टी के महासचिव श्री विवेकानन्द पाठक को सौंपी गयी है। टूण्डला विधानसभा की जिम्मेदारी वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी, पूर्व मंत्री श्री दीपक कुमार और प्रदेश महासचिव श्री बदरूद्दीन कुरैशी को दी गयी है। नौगवां सादात की जिम्मेदारी पूर्व सांसद श्री प्रवीन सिंह ऐरन, विधायक श्री नरेश सैनी, प्रदेश महासचिव श्री अली यूसुफ अली को सौंपी गयी है। बुलन्दशहर की जिम्मेदारी पूर्व सांसद श्री हरेन्द्र मलिक, विधायक श्री मसूद अख्तर, कांग्रेस महासचिव श्री विदित चैधरी तथा रामपुर विधानसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी पूर्व सांसद श्री राशिद अल्वी, पूर्व विधायक श्री नरेन्द्र पाल गंगवार तथा कांग्रेस महासचिव श्री ब्रम्हस्वरूप सागर को सौंपी गयी है।

नियमित संपर्क बनाकर गर्भवती को सुरक्षित प्रसव का भरोसा दिलाएं

महराजगंज। डॉ. केपी सिंह ने कहा कि संस्थागत प्रसव पर सरकार के साथ साथ स्वास्थ्य विभाग का भी जोर है। इसके लिए जरूरी है कि शत प्रतिशत गर्भवती का पंजीकरण हो। गर्भवती को स्वास्थ्य विभाग की विभिन्न योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना, जननी सुरक्षा योजना तथा निःशुल्क जांच, दवा व उपचार के बारे में बताएं तथा लाभ दिलाएं। आशा कार्यकर्ता कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए सभी गर्भवती की ट्रेकिंग करें, तथा पंजीकरण कराकर तथा पहली जांच कराकर कार्ड बनवा दें। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी श्रीभागवत सिंह ने कहा कि आशा कार्यकर्ता अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए जब भी गांव में निकलें मॉस्क, ग्लब्स तथा सेनेटाइजर का प्रयोग जरूर करें साथ ही शारीरिक दूरी बनाकर बच्चों, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं से मिलें, गर्भवती को संस्थागत प्रसव, धात्री को कम से कम छह माह तक स्तनपान कराने के लिए प्रेरित करें।

आबकारी विभाग की कार्यवाही में लगभग 28 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद

लगभग 800 किलोग्राम लहन नष्ट, 4 भट्ठियां तोड़ी गयी एंव 01 अभियोग पंजीकृत

गोरखपुर/जिलाधिकारी के विजेंद्र पांडेय के निर्देश पर जनपद गोरखपुर में अवैध शराब के विरुद्ध आबकारी विभाग द्वारा चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के अन्तर्गत आबकारी निरीक्षक क्षेत्र 7 खजनी कृष्ण कुमार सिंह एवं आबकारी निरीक्षक क्षेत्र 06,गोला अमित कुमार श्रीवास्तव के संयुक्त नेतृत्व में अटल मार्का ईंट भट्टा , ग्राम * विहारी बुजुर्ग * थाना खजनी पर दबिश किया गया। दविश के दौरान 28 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद कर लगभग 800किग्रा लहन एवं अवैद्य शराब बनाने का उपकरण मौके स्थल पर नष्ट किया और 04 भट्ठियां तोड़ी गयी । सुसंगत धारा में 1 अभियोग पंजीकृत किया गया- कार्यवाही में शामिल प्रधान आबकारी सिपाही/ आबकारी सिपाही शिवसागर , ऋतुप्रकाश चौधरी ,विन्दु कुमार ,अनिल कुमार चौधरी , जगदीश प्रसाद शामिल रहे।

गोरखपुर विश्वविद्यालय पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ,आरएसएस के गुरु दक्षिणा समारोह में लेंगे हिस्सा

गोरखपुर/उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दो दिवसीय दौरे पर बुधवार को गोरखपुर पहुंचे। वह बुधवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के विचार परिवार के गुरु दक्षिणा पर्व कार्यक्रम में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री इसके बाद भाजपा की ओर से चलाए जा रहे सेवा सप्ताह कार्यक्रम में गोरखनाथ मंदिर में दिव्यांगों को कृत्रिम उपकरण देंगे।

आरएसएस के गुरु दक्षिणा पर्व में होंगे शामिल

आरएसएस की महानगर इकाई की ओर से बुधवार शाम 4:30 बजे दीक्षा भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है ।स्वयंसेवक भगवा ध्वज को गुरु का स्थान देते हैं और गुरु दक्षिणा पर्व के रूप में इस कार्यक्रम को मनाते हैं। तकरीबन दो घंटे के कार्यक्रम में संघ की प्रार्थना, भगवा ध्वज का पूजन एवं ध्वज प्रणाम होगा। कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ संबोधित करेंगे।बुधवार को गोरखनाथ मंदिर में रात्रि प्रवास के बाद गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी सेवा सप्ताह के अंतर्गत भाजपा के जिला व महानगर इकाई के तत्वावधान में गोरखनाथ मंदिर में सुबह 11 बजे दिव्यांगों को उपकरण देंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर भाजपा की ओर से मनाए जा रहे सेवा सप्ताह में मुख्यमंत्री 140 दिव्यांगों को ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, एमआर किट, सेंसर किट आदि कृत्रिम उपकरण देंगे।

जंगल कौड़िया-कालेसर फोरलेन का वर्चुअल लोकार्पण भी कर सकते है सीएम

जंगल कौड़िया-कालेसर फोरलेन का वर्चुअल लोकार्पण 19 सितंबर को हो सकता है। संभावित तिथि को लेकर संबंधित अधिकारियों ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है। लगभग 17 किलोमीटर लंबे फोरलेन के लोकार्पण कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भी वर्चुअल जुड़ने की संभावना है। एनएचएआई के परियोजना निदेशक श्रीप्रकाश पाठक के अनुसार संभावित तिथि को लेकर तैयारी की जा रही है। अभी समय और कार्यक्रम का विवरण नहीं आया है। यहां जान लें कि कुछ दिन पूर्व भी लोकार्पण की घोषणा हुई थी, लेकिन कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नितृत्व में भारत विश्व मे प्रथम स्थान प्राप्त होगा - कमलेश पासवान

गोरखपुर/बांसगांव लोकसभा के सांसद कमलेश पासवान ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन की हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भारत को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बहुत जल्द न0-1 होगा । पासवान द्वारा आगे कहते हैं कि सर्जिकल स्ट्राईक,जन कल्याण योजना, जीएसटी और सवर्ण आरक्षण, अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी करना, अल्पसंख्यको से संबंधित फैसले, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ व शिशु की देखभाल,आदर्श ग्राम योजना,स्वच्छ भारत अभियान, प्रधानमंत्री उज्वला व आवास योजना,स्टार्ट अप इण्डिया, प्रधानमंत्री जन धन योजना, कृषि सम्मान योजना,राम मंदिर निर्माण कार्य का शिलान्यास करना एवं अन्य योजनाओं को भारत में लागू किए। नरेंद्र मोदी ने पुरे विश्व में भारत का रोशन किए। जिससे पुरे विश्व में भारत का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इस मुकाम तक पहुंचाने वाले देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन की मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।यह जानकारी सांसद मीडिया प्रभारी संतोष श्रीवास्तव ने दी।

कोरोना संक्रमण जैसी महामारी के बीच सब्जियों का भाव छू रहा आसमान

सब्जियों का राजा आलू व प्याज भी गरीबों के लिए हो रहा मोहताज

गोरखपुर/ एक तरफ जहां कोरोना महामारी वहीं दूसरी ओर बारिश और बाढ़ ने लोगों की कमर तोड़ दी है। यह अब उनसे उबरने के लायक भी नहीं है कि तेजी से बढ़ती सब्जियों की कीमत ने आम लोगों को अपना पेट काटने के लिए मजबूर कर दिया है। गरीब व मध्यम लोगों के किचन का बजट बिगड़ गया है।सब्जियों का राजा आलू भी अब गरीबों के लिए मोहताज हो रहा है।

महंगी सब्जियों के कारण स्वाद भी बिगड़ गया है। हरी सब्जियों के साथ-साथ आलू, प्याज और अन्य स्थायी सब्जियों की कीमतें भी आसमान छू रही हैं। हरी सब्जियों के दाम दो से तीन गुना हो गया हैं।

आलू की कीमत जहां 10-15 रुपये प्रति किलो था,आज वही आलू 32-35 रुपये प्रति किलो बिक रहा है।टमाटर, बैगन,गोभी आदि सब्जियों के भाव पूछने पर दुकानदार पाव किलो का रेट बताते है क्योंकि मंहगी सब्जी होने के वजह से लोग पाव किलो से ही गुजर बसर कर रहे है। थोक विक्रेताओं का कहना है कि बारिश के कारण आगमन कम है, जिसके वजह से कीमत में वृद्धि हुई है ।वहीं हरी सब्जीयों के भाव आसमान छूने से आम लोगों को खरीदना दुश्वार हो गया है।पड़ौली के ध्रुव वर्मा, रामू,गीता देवी, संजू देवी ने गोरखपुर अवध नगरी संवाददाता से बात करते हुए बताए कि कोरोना काल में जहां कामकाज बंद हो गया है प्रदेशों से लोग वापस आकर घर बैठे हुए है वहीं आज जिविका चलना मुश्किल हो गया है ऐसे स्थिति में महंगी सब्जियों की खरीदारी करना दुश्वार हो गया है।

भारतीय वोटर तय करेंगे ट्रम्प का भविष्य

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रैम्प इस वक्त भारत पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान हैं इसकी वजह आगामी चुनाव में खुद को एक बार फिर अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में देखना हैं भारत और चीन के एलएसी के मुद्दे हो ट्रैम्प का हर बयान भारत के पक्ष में दिखता हैं दिखना भी चाहिए वजह हैं कोविड-19 यानी कोरोना वायरस इस ने पूरे विश्व में हाहाकार मचा दिया, चीन से उत्पन्न हुए इस वायरस ने लाखों अमेरिकन की जान ले ली अमेरिका कहीं न कहीं मानता हैं इसमें चीन की साजिश हैं, पर खुल कर कुछ कह नहीं पाता अब अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में कुछ ही समय शेष बचा हैं ट्रैम्प अपनी पूरी ताकत भारतवंशियों पर लगाए हैं। अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव की तैयारियां जोरों पर हैं, वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफकी है. अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मेरे दोस्त हैं और एक महान नेता हैं,अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पीएम मोदी को लेकर कहा, प्रधानमंत्री मोदी मेरे दोस्त हैं और वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, कुछ भी आसान नहीं है लेकिन वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं. भारत को एक महान नेता मिला है और एक महान व्यक्ति मिला है. इस साल फरवरी में फर्स्ट लेडी मेलानिया ट्रंप के साथ भारत की अपनी दो दिवसीय यात्रा के बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, हमारे पास एक अविश्वसनीय समय था और हमने देखा कि लोग कितने अविश्वसनीय हैं. यह एक अविश्वसनीय जगह और देश है और यह निश्चित रूप से बड़ा है, साथ ही ह्यूस्टन में हाउडी मोदी कार्यक्रम के बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि यह एक शानदार इवेंट था. यह अविश्वसनीय था. प्रधानमंत्री मोदी अधिक उदार नहीं हो सकते थे. हमें भारत और पीएम मोदी से बहुत समर्थन है, मुझे लगता है कि भारतीय-अमेरिकी ट्रंप के लिए मतदान करेंगे, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने आगामी नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के मद्देनजर भारतीय मूल के अमेरिकी मतदाताओं को अपने पक्ष में लाने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है। भारत दौरे से लौटने के तुरंत बाद ट्रम्प ने उन्हें प्रभावित करने के लिए योजना बनाई। अमेरिका में ऐसा पहली बार हो रहा है कि रिपब्लिकन राष्ट्रपति के चुनावी कैंपेन में भारतवंशी समुदाय के लिए एड कैंपेन आ रहा है। इसकी वजह यह है कि चुनाव में 14 लाख भारतीय मूल के अमेरिकी निर्णायक हो सकते हैं। सबसे बड़ी और दिलचस्प बात यह है कि 2016 में हुए पिछले चुनाव में 84: भारतीय अमेरिकियों ने ट्रम्प के खिलाफवोट दिया था। राष्ट्रपति बनने के बाद से ट्रम्प लगातार भारतवंशियों में पैठ बना रहे हैं। वे प्रशासन में 22 भारतवंशियों को शामिल कर चुके हैं। यह किसी भी प्रवासी समूह का अब तक का सबसे बड़ा दल है। इनमें निक्की हेली यूएन में अमेरिकी राजदूत, सीमा वर्मा को मेडीकेयर और मेडीकेटेड सर्विस का प्रशासक बनाया। राज शाह को व्हाइट हाउस के कम्युनिकेशन डायरेक्टर है, वहीं अजीत पाई फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन के चेयरमैन हैं। 14 लाख रजिस्टर्ड वोटर, सबसे अधिक वोटिंग प्रतिशत। एशियन अमेरिकन और पैसिफिक आइलैंडर्स डेटा के मुताबिक 2016 के राष्ट्रपति चुनाव में 12 लाख भारतवंशी रजिस्टर्ड वोटर थे। इस बार 14 लाख होने की उम्मीद है। पिछली बार प्रवासियों में सबसे ज्यादा 62: वोटिंग भारतवंशियों की रही है। 2016 के चुनाव में 84: भारतीयों ने ट्रम्प का विरोध किया था। 62: भारतवंशी खुद को डेमोक्रटिक बताते हैं। 2016 के चुनाव में 80: से ज्यादा भारतीयों ने ट्रम्प की प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार हिलेरी क्लिंटन को वोट दिया था। फिलहाल अमेरिका में 5 भारतीय अमेरिकी सांसद हैं। ये सभी डेमोक्रेटिक हैं। इनमें रो खन्ना (कैलिफोर्निया), प्रमिला जयपाल (वॉशिंगटन), राजा कृष्णामूर्ति (इलिनोइस), तुलसी गैबॉर्ड (हवाई) और कमला हैरिस (कैलिफोर्निया) शामिल हैं। ट्रम्प पहले विज्ञापन में मेलानिया के साथ ताज महल के सामने दिख रहे हैं। इसमें वे कह रहे हैं कि भारतीय बिजनेस में टाइटन हैं और इनोवेशन और टेक्नोलॉजी की दुनिया में मास्टर हैं। मैं आपके लिए हमेशा संघर्ष करता रहूंगा। दूसरे विज्ञापन में ट्रम्प मोदी के साथ हैं। इसमें वे कह रहे हैं कि अमेरिका भारत को प्यार करता है। अमेरिका भारत के साथ मजबूत साझेदारी की इच्छा रखता है। भारत में बने मीम्स पर इवांका ने संजीदा जवाब दिए हैं। सिंगर दिलजीत दोसांझ ने इवांका के ताजमहल विजिट की तस्वीर में खुद को इवांका के साथ दिखाया था। इवांका ने लिखा- शुक्रिया, मुझे शानदार ताजमहल दिखाने के लिए। यह अनुभव मैं कभी नहीं भूल पाउंगी। दूसरे मीम पर लिखा- मैं भारतीयों की गर्मजोशी की सराहना करती हूं। मैंने कई नए दोस्त बनाए हैं। 1990 के दशक में भारतवंशी क्रमशः डेमोकेट्स और रिपब्लिकन को 60.40 अनुपात में समर्थन देते रहे, लेकिन 9/11 के हमले के बाद अमेरिका में अप्रवासी समुदाय के खिलाफहमले बढ़ गए। रिपब्लिकन पार्टी ने खुद को ईसाई धर्म का प्रचार करने वाले और अप्रवासियों के प्रति नफरत रखने वाले समूहों से जोड़ लिया। भारतीयों का रिपब्लिकन पार्टी की तरफझुकाव कम होता गया। 2016 में तो 20: से कम भारतीयों ने रिपब्लिकन पार्टी का समर्थन किया। इसकी वजह यह रही कि रिपब्लिकन उम्मीदवार ट्रम्प ने अपने प्रचार में अप्रवासियों के खिलाफसख्त नीति बनाने की बात जोरशोर से उठाई। अभी भी बड़े पैमाने पर ट्रम्प को समर्थन मिलना फिलहाल संभव नहीं दिख रहा है।

क्योंकि, आव्रजन पर ट्रम्प की नीतियों ने उच्च शिक्षित पेशेवर भारतीय अमेरिकियों के हितों को चोट पहुंचाई है। उन्होंने एच-1बी वीसा की संख्या सीमित करने के ट्रम्प प्रशासन के फैसले की आलोचना की है। इसके अलावा, ट्रम्प प्रशासन ने एच-1बी वीसा पाने वालों के जीवनसाथी के वर्क परमिट को रद्द करने की इच्छा भी व्यक्त की है। हालांकि ऐसा भी हो सकता है कि कुछ भारतवंशी डोनाल्ड ट्रम्प को मोदी से संबंधों के नजरिए से देखें। एक साल तक चले प्रारम्भिक चक्रों, अधिवेशनों और अन्य प्रचार गतिविधियों के बाद अब राष्ट्रपति चुनाव अपने अंतिम दौर में पहुंचने ही वाला है। 29 सितम्बर से जो बाइडेन और डोनाल्ड ट्रम्प वादविवादों की साप्ताहिक श्रृंखला में एक-दूसरे का सामना करेंगे। इसमें व्यवधान केवल 7 अक्टूबर को आयेगा जब उनकी उपराष्ट्रपति पद की उम्मीदवार क्रमशरू कमला देवी हैरिस और माईक पेन्स का प्रत्यक्ष मुकाबला होगा। ये बहसें निरूसंदेह किसी भी चुनाव की सबसे बड़ी परिघटनाएं होती हैं। इन्हें देखने वालों की संख्या अपार होती है और वे ऐसे गिने-चुने अवसरों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनमें प्रत्याशी एक-दूसरे का सीधे तौर पर मुकाबला करते हैं। इन स्पर्धाओं ने पूर्व में अनेक चुनावों के भाग्य तय किये हैं। टेलीविजन के उद्भव के बाद तो लगभग वे ही उम्मीदवार जीतते आये हैं जिन्होंने इन वाद-विवाद प्रतिस्पर्धाओं में बेहतर प्रदर्शन किया हो। अनेक तो इसलिये जीते हैं क्योंकि उनका वाद-विवाद प्रदर्शन पूरे समय में अच्छा रहा है। खासकर, 1960 में पहली बार प्रसारित राष्ट्रपति चुनाव के राष्ट्रव्यापी टीवी बहसों के दौरान जॉन एफ कैनेडी अपने प्रभावशाली प्रदर्शनों के कारण चुनाव में मजबूती से उभरे थे। इसमें उनका करिश्माई व्यक्तित्व और बेहतरीन वक्तृत्व कला पूरी तरह से लोगों के समक्ष आई थी। अब हमें द्वितीय श्रेष्ठता के क्रमांक पर रहना कतई मंजूर नहीं है२, कैनडी ने कहा था, जो बाद में अपने मजबूत और ऐलानिया बयानों के लिये जाने गये थे। उन्होंने कहा था-मैं चाहता हूं कि पूरी दुनिया एक बार फिर से अमेरिका की ओर देखे-हमारी गतिशीलता को देखने और यह महसूस करने के लिये कि हमारी सुबह निकट भविष्य में ही है। कैनेडी के सार्वजनिक संभाषणों की कला ने उन्हें इसी तरह के अनेक आकर्षक बयान गढ़ने में मदद की थी, जो मीडिया के लिये बने थे। उपरोक्त तरह के बयानों ने मुकाबले का परिदृश्य बदलकर रख दिया था।

सम्पादकीय

लोकतंत्र बनाम तानाशाही

इस समय चीन की तानाशाही के विरुद्ध सम्पूर्ण विश्व लामबंद होता दिख रहा है। चीन के द्वारा हांगकांग में लोकतंत्र को कुचला जा रहा है। आज से लगभग 30 वर्ष पूर्व चीन ने त्यानमन स्क्वेयर में भी लोकतान्त्रिक आवाज को बेरहमी से कुचला था। इसमें कोई संशय नहीं है कि पश्चिमी देशों द्वारा लोकतंत्र को अपनाये जाने से मानव विकास को भारी गति मिली है। लोकतंत्र में हर नागरिक को खुलापन मिलता है और वह अपनी सृजनात्मक शक्ति का उपयोग कर सकता है जैसे जेम्स वाट द्वारा स्टीम इंजन को बनाया जाना अथवा बिलगेट्स द्वारा विंडोस साफ्ट वेयर को बनाया जाना। इसी क्रम में हम देखते हैं कि अमरीकी लोकतंत्र ने पिछली शताब्दी में एटमबम, जेट इंजन, इंटरनेट जैसे आविष्कार किये क्योंकि उसने अपने नागरिकों को लोकतांत्रिक खुलापन उपलब्ध कराया। सच है कि रूस और चीन द्वारा भी तमाम आधुनिक उपकरण बनाये गये हैं लेकिन मूल रूप से नया सृजन तो लोकतान्त्रिक व्यवस्था के अंतर्गत ही हुआ है। रूस और चीन ने मुख्यतरू पश्चिमी देशों द्वारा किये गये आविष्कारों की नकल करने में सफलता मात्र हासिल की है। साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि लम्बे समय तक लोकतान्त्रिक व्यवस्था तभी सफल होती है जब वह दूसरे देशों का शोषण करे। वर्तमान युग में लोकतंत्र की शुरुआत यूनान में आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुई थी। यूनान के लोगों ने लोहे का आविष्कार किया था। उन्होंने लोहे के अस्त्रों के बल पर अपने पड़ोसियों को लूटा और उस लूट से मिली समृद्धि के बल पर वे लोग लम्बी-लम्बी लोकतान्त्रिक चर्चाएं करने का आर्थिक बोझ वहन कर सके थे। उनके लिए लम्बे समय तक चर्चा में लगे रहना इसलिए संभव था क्योंकि उनके पास लूट की रकम उपलब्ध थी जिससे भोजन इत्यादि आसानी से मिल जाता था। लेकिन शीघ्र ही लूटने लायक पड़ोसी लोग नहीं बचे, लूट की रकम उपलब्ध नहीं हुई और लम्बी लोकतान्त्रिक चर्चाएं स्वतरू ध्वस्त हो गई। यूनान का लोकतंत्र समाप्त हो गया। इसके बाद रोम में लोकतंत्र का उदय हुआ। उन लोगों ने घुड़सवार को लोहे के कवच उपलब्ध कराए और इस अस्त्र के बल पर उन्होंने बड़े क्षेत्र में दूसरों को लूटा। पुनः लूट से लाई रकम से उन लोगों ने अपने देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था लागू की। जैसे ही लूटने के लिए दूसरे देश उपलब्ध नहीं रहे, रोम का लोकतंत्र टुकड़े-टुकड़े हो गया। लोकतंत्र का उदय पुनरू मध्य युग में हुआ। यह वही समय है जब इंग्लैंड ने भारत जैसे तमाम देशों को अपना उपनिवेश बना लिया था। इंग्लैंड में बना महंगा माल उपनिवेशों को बेच कर, एवं उपनिवेशों के घरेलू उद्योगों को नष्ट कर इंग्लैंड ने भारी समृद्धि हासिल की थी। आज से 200 वर्ष पूर्व विश्व की आय में भारत का हिस्सा लगभग 23 प्रतिशत था जो इंग्लैंड के शासन के अंत में यानि 1947 में घटकर मात्र 2 प्रतिशत रह गया था। इससे स्पष्ट होता है कि इंग्लैंड में जिस समय लोकतंत्र का सूर्योदय हुआ था उसी समय भारत में गरीबी का भारी विस्तार हुआ था। हमारी गरीबी से जनित इस समृद्धि के बल पर इंग्लैंड ने अपने श्रमिकों को राहत पहुंचाई जैसे फैक्ट्री एक्ट लागू किया और लोकतंत्र को संभालकर रखा। इंग्लैंड की परिस्थति का विवरण हमें मार्क्स के सहयोगी एंगल्स के उस वाक्य में मिलता है जो उन्होंने रूसी कम्युनिस्ट कौत्स्की को लिखे एक पत्र में लिखा था। एंगल्स ने लिखा कि श्इंग्लैंड के श्रमिक इंग्लैंड के विश्व बाजार पर एकाधिकार के भोज का आनंद उठा रहे हैं।श् यानि इंग्लैंड के श्रमिक शोषित नहीं बल्कि अपने लोकतांत्रिक सरकार द्वारा भारत जैसे दूसरे देशों के शोषण से अर्जित रकम में अपना हिस्सा पाकर प्रसन्न थे। इंग्लैंड के नेताओं और श्रमिकों ने आपसी मेलजोल से उपनिवेशों को लूटा और उन उपनिवेशों से मिली रकम के आधार पर अपने लोकतंत्र को पोसा। आधुनिक समय में अमेरिका ने अफ्रीका से दासों को लाकर समृद्धि हासिल की और इराक जैसे देशों पर आक्रमण कर उनके संसाधनों को हासिल किया। विश्व व्यापार संगठन में पेटेंट एक्ट को जोड़कर तमाम गरीब देशों को महंगी तकनीकें बेच कर अपनी समृद्धि बनाई, इत्यादि। इस लूट के बल पर वहां लोकतंत्र चल रहा है। संभवतरू भारत में बौद्ध काल में लोकतंत्र के ज्यादा समय तक न टिक पाने का यही कारण था कि हम दूसरे देशों की लूट नहीं करते थे। अतरू हम देखते हैं कि लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं 100-200 वर्ष से अधिक नहीं चली हैं। जब तक वे चली हैं, उनका आधार दूसरे देशों का शोषण था। यानि समृद्ध देशों में लोकतंत्र और गरीब देशों की गरीबी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ऐसे में गरीब देशों द्वारा लोकतंत्र को अपनाना सफल नहीं हो रहा है जैसा कि फिलीपीन्स के फर्डिनान्द मार्कोस, युगांडा के इदि अमीन और वर्तमान में बेलेरुस में लुशिनको जैसे तमाम शासक हुए हैं जो कि लोकतंत्र के आडम्बर टेल अपने लोगों का शोषण कर रहे हैं। लेकिन जिस प्रकार इंग्लैंड के वायसराय ने कुछ लोगों को राय बहादुर की उपाधि देकर उन्हें अपने पक्ष में किया था।

जीडीपी में गिरावट अल्पकालिक है

केंद्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा इस वर्ष 31 अगस्त को जारी आंकड़ों के अनुसार, इस वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी में 23.9 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी हैघ् जीडीपी में यह गिरावट कृषि को छोड़ अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में दिखायी दे रही हैघ् जबसे जीडीपी के आंकड़े प्रकाशित होना शुरू हुए, तब से यह पहली ऐसी घटना है, जब किसी एक तिमाही में जीडीपी में इतनी बड़ी गिरावट आयी है, हालांकि, यह गिरावट बड़ी है, लेकिन अप्रत्याशित कतई नहीं हैघ्ं सभी जानकार मान रहे थे कि इस तिमाही में जब पूरा देश लॉकडाउन में रहा, उत्पादन केंद्र समेत तमाम सेवाएं बंद थीं अस्पतालों में कोरोना संक्रमितों के अलावा सामान्यतरू किसी अन्य का इलाज नहीं हो रहा थाघ् अधिकांश मजदूर वापस अपने घर चले गये थे, ऐसे में जीडीपी में गिरावट संभावित ही थी जब किसी अर्थव्यवस्था में जीडीपी वृद्धि प्रभावित होती है, तो उसकी जिम्मेदारी उस देश की सरकार की आर्थिक नीतियों और कार्य निष्पादन पर आती हैघ् लेकिन जीडीपी में यह गिरावट सरकार की नीतियों की खामियों के कारण नहीं, बल्कि ईश्वरीय आपदा के कारण हैघ् कोरोना संक्रमण के दौरान आर्थिक गतिविधियों में गिरावट सभी देशों में एक समान नहीं रही, भारत की जीडीपी में जहां 23.9 प्रतिशत की गिरावट रही, वहीं इंग्लैंड में यह गिरावट 20.4, फ्रांस में 13.8, इटली में 12.4, कनाडा में 12, जर्मनी में 10 और अमेरिका में 32.9 प्रतिशत रही,प्रश्न है कि अमेरिका को छोड़, अन्य देशों की तुलना में अप्रैलदृजून की तिमाही में भारत की जीडीपी में इतनी बड़ी गिरावट क्यों आयी? क्योंकि भारत में लॉकडाउन सबसे पहले लगाया गया, जबकि शेष देशों ने इसे लगाने में देरी कीघ् अर्थव्यवस्था बाधित न हो, इस कारण अमेरिका, यूरोप के देशों, ब्राजील आदि लॉकडाउन टालते रहे, यह देखते हुए कि अन्य देशों की तुलना में देश में स्वास्थ्य सुविधाएं कम हैं और संक्रमण फैलने की स्थिति में हम उससे निपट नहीं पायेंगे, भारत सरकार ने लॉकडाउन जल्दी से लागू कर दिया,दुनिया के विकसित देश इस गुमान में थे कि उनके पास उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं हैं और महामारी से निपटने में वे पूरी तरह सक्षम हैं, उन्होंने लॉकडाउन में देरी की, परिणाम हमारे सामने है, अमेरिका की जनसंख्या मात्र 33 करोड़ है, भारत की जनसंख्या से एक चौथाई से भी कम, वहां कोरोना संक्रमितों की संख्या भारत के 39.3 लाख की तुलना में 69.4 लाख है, ब्राजील की जनसंख्या मात्र 21.3 करोड़ है, वहां 40.5 लाख लोग कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं, भारत में कोरोना संक्रमण से होनेवाली मृत्यु दर 1.75 प्रतिशत है, अमेरिका में यह दर 3.1 प्रतिशत, ब्राजील में 3.2 प्रतिशत और दक्षिण अफ्रीका में 2.1 प्रतिशत है, इटली में यह दर 13.7 प्रतिशत रही, अमेरिका तो अपनी अर्थव्यवस्था भी नहीं बचा पाया, भारत जानता था कि देश में टेस्टिंग की पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं, ऐसे में सरकार के पास दो विकल्प थे, अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए जीवन को सामान्य रूप से चलाये रखा जाये, या जीवन बचाने के लिए लॉकडाउन किया जाये, इस बीच अस्पताल, दवाइयां, वेंटिलेटर, पीपीइ किट्स और टेस्टिंग सुविधाओं को बेहतर किया जाये, भारत सरकार ने दूसरा विकल्प चुना, शेष दुनिया ने भी दूसरा विकल्प चुना, लेकिन देरी से, इसलिए इन देशों में पिछली तिमाही में जीडीपी में गिरावट तो आयी, लेकिन यह गिरावट देरी से आना शुरू हुई, देश और दुनिया की जीडीपी में गिरावट अल्पकालिक ही है, क्योंकि संक्रमण समाप्त होने के बाद अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटने वाली है, मांग में आयी वर्तमान कमी की भरपायी भी आनेवाले समय में होगी, जिसे अर्थशास्त्र की भाषा में पेंटअप डिमांड कहा जाता है, कारों की बढ़ती मांग से इस बात का आभास होना शुरू हो चुका है, भारत ने इस महामारी से आत्मनिर्भरता की एक बड़ी सीख ली है, पिछले दो दशकों से हमारी निर्भरता चीन पर बढ़ती जा रही थी, इस कारण हमारे उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ रहा था, वर्ष 2012 से 2015 तक हमारे औद्योगिक उत्पादन सूचकांक की वृद्धि लगभग शून्य तक पहुंच गयी थी, पिछले कुछ समय से उसमें थोड़ा-बहुत सुधार दिखायी दे रहा है, लेकिन चीन और शेष दुनिया पर हमारी निर्भरता में कोई बड़ा असर नहीं पड़ा था, महामारी के दौरान आवश्यक पीपीइ किट, मास्क, वेंटिलेटर, टेस्टिंग किट और चिकित्सा उपकरणों का देश में उत्पादन बढ़ाकर, अपनी और अन्य देशों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने से देश में आत्मविश्वास का वातावरण बना है, सरकार ने संकल्प लिया है कि आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को पूरा करने के लिए दवा उद्योगों के लिए कच्चा माल (एपीआइ), इलेक्ट्रॉनिक्स, केमिकल्स, खिलौने, धातु, फर्टिलाइजर आदि वस्तुओं का देश में उत्पादन बढ़ाया जायेगा, उसके लिए सरकारी सहायता समेत सभी जरूरी उपाय किये जायेंगे,शेष दुनिया की कई कंपनियां जो चीन में कार्यरत थीं, उनमें से कई भारत में आ रही हैंघ् यानी, भविष्य में औद्योगिक और प्रौद्योगिकी विकास के नये अवसर मिलने वाले हैं, जीडीपी में वर्तमान संकुचन आया है, लेकिन भविष्य उज्जवल हघ् इसके लिए सरकार, उद्योग और जनता सभी को प्रयास करने होंगे।

सत्ताभोगियों को कर्मयोगियों से बदलें

अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक गंभीर और दार्शनिक बात कही है कि नौकरशाही किसी भी उपलब्धि की मृत्यु है. फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधानमंत्री मोदी को विश्वास है कि अक्षम नौकरशाही को उपयोगी बनाया सकता है. परिवर्तनकारी पहल करते हुए उन्होंने बाबूशाही में बदलाव शुरू किया है. हाल ही में प्रधानमंत्री ने एक डिजिटल अभियान आइजीओटी-कर्मयोगी की शुरुआत की है. सरकार के मुताबिक, मिशन कर्मयोगी का उद्देश्य भविष्य के भारतीय प्रशासनिक सेवकों को तैयार करना है, जिसके लिए उन्हें रचनात्मक, सृजनात्मक, कल्पनाशील, नवोन्मेषी, सक्रिय, पेशेवर, प्रगतिशील, ऊर्जावान, सक्षम, पारदर्शी और तकनीकी तौर पर निपुण बनाया जायेगा. विशिष्ट भूमिका-दक्षताओं से युक्त, सिविल सेवक उच्चतम गुणवत्ता मानकों के साथ प्रभावी सेवाओं को सुनिश्चित करेंगे. इसे 'प्रशासनिक सेवाओं के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम क्षमता निर्माण (एनपीसीएससीबी)' के तौर पर नये प्रशासनिक आर्किटेक्चर के रूप में प्रस्तावित किया गया है. अत्यधिक कॉरपोरेट शब्दजाल केवल सरकार के उद्देश्य को दर्शाता है. वह उम्मीद करती है कि सिविल सेवक कॉरपोरेट संस्कृति और उसके तौर-तरीके अपनायें. सत्ताभोगी सिविल सेवकों को कर्मयोगियों में बदलने के लिए नये विधेयक में कई नयी एजेंसियों के गठन का प्रावधान है. मुख्य रूप से प्रधानमंत्री की अगुवाई वाली एचआर-काउंसिल, क्षमता निर्माण आयोग, डेटा संग्रह तथा प्रबंधन के लिए सरकारी स्वामित्व वाले विशेष प्रयोजन वाहन के साथ-साथ कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में एक समन्वय इकाई के गठन का प्रावधान है. यह सरकार द्वारा भूमिका-आधारित डिलीवरी सिस्टम को सुनिश्चित करने के संकल्प को दर्शाता है न कि शासन-आधारित. इसके लिए ढांचागत और वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी गयी है. एनपीसीएससीबी का इरादा और सामग्री प्रशंसनीय है. हालांकि, भारत की आर्थिक नीति की ही तरह मिशन कर्मयोगी भी दोषपूर्ण है. बीते 40 वर्षों से देश की मौद्रिक और वित्तीय नीतियां 'आपूर्ति अर्थशास्त्र' से संचालित हो रही हैं. वर्ष 1991 से वामदलों को छोड़कर लगभग सभी पार्टियों ने अत्यधिक क्षमता निर्माण को आंख मूंदकर समर्थन दिया है. चार दशक बाद, मांग में आयी गिरावट की वजह से अर्थव्यवस्था संकट में है. मौजूदा व्यवस्था में क्षमता बढ़ोतरी पर अत्यधिक जोर देकर, एनडीए सरकार कुटिल सिविल सेवा के ट्रैप में फंस गयी है. नये फ्रेमवर्क में जवाबदेही और समयबद्ध डिलिवरी सिस्टम की उम्मीद शायद ही की जा सकती है. दुर्भाग्य से, भारतीय अर्थव्यवस्था और इसका प्रभावी प्रशासन दो करोड़ पब्लिक अधिकारियों की गुणवत्ता और प्रतिबद्धता पर निर्भर है, जिन्हें लगभग 15,000 आइएएस अधिकारियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है. यद्यपि बाबू लोग प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों और अन्य लोकतांत्रिक तरीके से चुने गये प्रतिनिधियों को रिपोर्ट करते हैं. निर्वाचित कार्यकारिणी द्वारा पास नीतियों और योजनाओं को पूर्णरूप से तथा ईमानदारी के साथ लागू करने में वे शायद ही कभी जवाबदेह होते हैं. यहां तक कि खराब प्रदर्शन के कारण अगर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री मतदाताओं द्वारा बेदखल कर दिये जाते हैं, तो भी डीएम की प्रोन्नति हो जाती है. नौकरशाही को सफलता के लिए नहीं, बल्कि स्पष्ट विफलता के लिए पुरस्कृत किया जाता है. चूंकि, उन्हें जानकारियां सबसे पहले मिलती हैं, रुतबा बचाये रखने के लिए वे अक्सर इसका इस्तेमाल राजनीतिक नेतृत्व के खिलाफ करते हैं. भारत पहले से ही लालची बाबूगिरी के बोझ से दबा है. एक चालाक सिविल सेवक हमेशा ऐसे किसी बदलाव या रचनात्मक परिवर्तन का विरोध करता है, जो उसकी ताकत को सीमित करता हो और लापरवाही के लिए कार्रवाई तय करता हो. प्रधानमंत्री ने सही कहा था कि उनकी सरकार, न्यूनतम सरकार के साथ अधिकतम शासन को सुनिश्चित करेगी, क्योंकि वे जानते हैं कि भारत की व्यवस्था बाह्य दिखावा है. गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए वे सतर्क थे कि उनकी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को कैसे ये लोग नुकसान कर सकते हैं. पांच साल बाद, उन्हें संकुचन के बजाय वृद्धि पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी गयी है. आजादी के 75 साल बाद भी ग्रामीण भारत में संपर्क मार्ग, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, व्यवस्थित विद्यालय और स्वच्छ जलापूर्ति का अभाव है, तो इसके लिए जवाबदेह कौन है? इसमें गलती केवल नेताओं की नहीं है. राज्यों और केंद्र के बजटों से पर्याप्त धन का आवंटन किया गया है. लेकिन, इस राशि के सही इस्तेमाल के लिए नौकरशाहों की कोई जवाबदेही नहीं है. राजीव गांधी ने कहा था कि विकास कार्यों के लिए आवंटित एक रुपये में से केवल 15 पैसा ही लोगों तक पहुंचता है. जब सीएजी परियोजनाओं में वित्तीय अनियमितता और खरीद में हेराफेरी बताते हैं, तो क्यों निर्वाचित प्रतिनिधि ही केवल न्यायिक जांच और दंड का सामना करते हैं? वहीं फाइल बढ़ानेवाले छूट जाते हैं, जबकि वे फाइल को एक टेबल से दूसरे टेबल बढ़ाते हुए उनकी बात से सहमत होते हैं. अंग्रेज ऐसा प्रशासनिक ढांचा छोड़ गये हैं, जो किसी अन्य के बजाय खुद को रिपोर्ट करता है. केवल आइएएस अधिकारी ही आइएएस अधिकारियों के चयन और तैनाती करने के हकदार हैं. मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति का सचिव हमेशा आइएएस ही होता है. आरबीआइ गवर्नर और अन्य डायरेक्टर से लेकर बैंकों के प्रमुख, खुफिया एजेंसियों, पीएसयू के प्रमुखों तक सब इसी ताकतवर समूह के हिस्से होते हैं. बेहतर अधिकारियों का चयन सुनिश्चित करने में नौकरशाही एक बार फिर से असफल रही है. मोदी ने संवेदनशील पदों को संभालने हेतु बाहरी और अंदर के लोगों की 360 डिग्री की चयन प्रक्रिया शुरू की है. वास्तव में, भारत में अच्छे अधिकारी हो सकते हैं, बशर्ते कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के कार्यालय बाह्य पेशेवरों द्वारा संचालित हों, जो अंदर के लोगों को नियंत्रित कर सकते हों. जब तक नुकसानदेह अफसरशाही के चरित्र को बदला नहीं जायेगा, तब तक कोई भी मिशन, यहां तक किसी बड़े विजन के साथ भी, बेहतर शासन नहीं ला सकता है.

सार समाचार .....

आईपीएल के प्रैक्टिस सेशन में हवा में गोता लगाकर कैच लपका

नई दिल्ली एजेंसी।

साउथ अफ्रीका के पूर्व लीजेंड जोंटी रोड्स इन दिनों इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में किंग्स इलेवन पंजाब को फील्डिंग के गुर सिखा रहे हैं। इस दौरान 51 साल के दिग्गज ने प्रैक्टिस सेशन में हवा में गोता लगाकर कैच लपका और कई युवाओं को चौंका दिया।

जोंटी का फील्डिंग सिखाते हुए वीडियो फ्रेंचाइजी ने ट्विटर पर शेयर किया है। उन्होंने कैप्शन में लिखा- क्या आपने ऐसा कैच पकड़ा है? इस पर कमेंट करते हुए कई यूजर्स ने उनकी तारीफ की। पंजाब टीम अब तक खिताब नहीं जीत सकी

इस बार आईपीएल कोरोना के कारण यूएई में 19 सितंबर से 10 नवंबर तक होना है। किंग्स इलेवन पंजाब का पहला मुकाबला 20 सितंबर को दिल्ली कैपिटल्स के साथ होगा। टीम अब तक खिताब नहीं जीत सकी है। उसने एक बार 2014 में फाइनल खेला है।

जोंटी के नाम 245 वनडे में 5935 रन दर्ज

जोंटी क्रिकेट जगत में बेस्ट फील्डर के तौर पर जाने जाते हैं। उन्होंने 52 टेस्ट में 2532 और 245 वनडे में 5935 रन बनाए हैं। 2003 वर्ल्ड कप के बाद उन्होंने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया था।

बीसीसीआई अध्यक्ष शारजाह स्टेडियम पहुंचे

बेंगलुरू एजेंसी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली आईपीएल की तैयारियों को देखकर खुश नजर आए हैं। वे सोमवार को यूएई के शारजाह स्टेडियम में पहुंचे थे। आईपीएल कोरोना के कारण यूएई में 19 सितंबर से 10 नवंबर तक होना है। सभी 60 मैच दुबई (24), अबु धाबी (20) और शारजाह (12) में होंगे। गांगुली ने शारजाह स्टेडियम में कोरोना से निपटने और बायो-सिक्योर माहौल में खेल की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि युवा खिलाड़ी उस क्रिकेट मैदान में खेलने को लेकर उत्सुक हैं, जहां सुनील गावसकर और सचिन तेंदुलकर जैसे महान खिलाड़ियों ने इतिहास रचा है। कोरोना के बीच मैच के लिए शारजाह स्टेडियम तैयार

हाल में शारजाह स्टेडियम में बड़े पैमाने पर कई बड़े काम किए गए हैं। इसमें आर्टिफिशियल छत लगाना, रॉयल सुइट को अपग्रेड करना के अलावा कॉमेंट्री बॉक्स और हॉस्पिटैलिटी बॉक्स को कोरोना से जुड़े नियमों के अनुसार तैयार किया गया है।

आईपीएल में करीब 20 हजार कोरोना टेस्ट होना है

इस बार टूर्नामेंट के हर 5वें दिन खिलाड़ी और सपोर्ट स्टाफ का कोरोना टेस्ट किया जाएगा। कुल 20 हजार जांच होंगी। इसके लिए बीसीसीआई 10 करोड़ रुपए खर्च करेगा। बुधवार तक 3500 टेस्ट हो चुके हैं। आईपीएल का पहला मुकाबला डिफेंडिंग चैम्पियन मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के बीच 19 सिंतबर को खेला जाएगा।'

2016 के चैम्पियन लीस्टर सिटी ने जीत से शुरुआत की, वेस्ट ब्रोम को 3-0 से हराया

भोपाल एजेंसी। इंग्लैंड की फुटबॉल लीग 'प्रीमियर लीग' का नया सीजन शनिवार से शुरू हो गया। 2016 के चैंपियन लीस्टर सिटी ने जीत के साथ शुरुआत की। उसने वेस्ट ब्रोम को 3-0 से हराया। उसकी ओर से टिमोथी केसेटने ने 56वें और जैमी वार्डी ने 74वें मिनट और 84वें मिनट में पेनल्टी पर गोल किए। वार्डी अवे मैच में दो पेनल्टी पर गोल करने वाले दिसंबर 2015 के बाद पहले खिलाड़ी बन गए हैं। इससे पहले, लीस्टर के रियाद मेहरेज ने एवर्टन के खिलाफ ऐसा किया था। इससे पहले, डिफेंडिंग चैंपियन लिवरपूल ने लीड्स यूनाइटेड को 4-3 से हराया। लिवरपूल की ओर से मो. सालाह ने चौथे मिनट में पेनल्टी पर, 33वें मिनट और 88वें मिनट में पेनल्टी पर गोल किए। उनके अलावा वर्जिल वान डिक ने 20वें मिनट में गोल किया। सालाह ने लगातार चौथे सीजन में ओपनिंग मैच में गोल किया। वे ऐसा करने वाले लिवरपूल के पहले खिलाड़ी बन गए हैं। लिवरपूल घरेलू मैदान पर 60 मैच से हारा नहीं है। उसने 49 मैच जीते, जबकि 11 ड्रॉ खेले हैं।

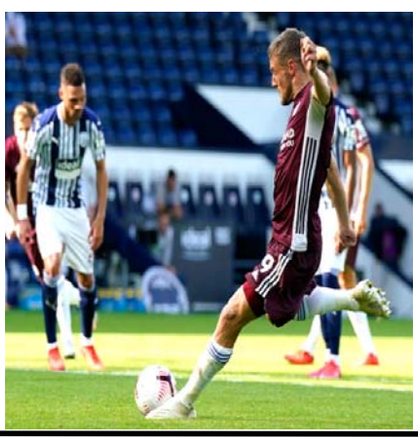

डॉट बॉल फेंकने वाले टॉप-5 बॉलर्स में 4 भारतीय

कोरोनावायरस के कारण आईपीएल का 13वां सीजन इस बार यूएई में 19 सितंबर से शुरू होने जा रहा है। फाइनल 10 नवंबर को होगा। सभी 8 टीमों के बीच 53 दिन में फाइनल समेत 60 मुकाबले होंगे। अब तक हुए 12 सीजन में मुंबई इंडियंस ने सबसे ज्यादा चार बार 2013, 2015, 2017 और 2019 में आईपीएल जीता। दूसरे नंबर पर चेन्नई सुपर किंग्स है। यह टीम 2010, 2011 और 2018 में आईपीएल की चैम्पियन बनी। यानी कुल तीन बार।

न्यूयॉर्क | एजेंसी।

फाइनल खेलने के मामले में चेन्नई सबसे आगे है, जो 12 में से 8 सीजन में फाइनल तक पहुंच चुकी है। वहीं, लीग के इतिहास में सबसे ज्यादा रन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान विराट कोहली के हैं। उन्होंने 177 मैच में 5412 रन बनाए हैं।

IPL: टीम रिकॉर्ड्स

चेन्नई सुपर किंग्स लगातार 2 आईपीएल जीतने वाली अकेली टीम

2020 के सबसे ज्यादा कमाई वाले फुटबॉलर

नई दिल्ली | एजेंसी।

स्पोर्ट्स मैगजीन फोर्ब्स ने 2020 में सबसे ज्यादा कमाई वाले फुटबॉलर्स की लिस्ट जारी की है। इसमें अर्जेंटीना के लियोनल मेसी 126 मिलियन डॉलर (करीब 924 करोड़ रुपए) कमाई के साथ लगातार दूसरे साल टॉप पर बने हुए हैं। कोरोना के कारण उन्होंने पिछले साल के मुकाबले 7 करोड़ रुपए की कम कमाई हुई है। वहीं, उनके बाद पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो 117 मिलियन डॉलर (करीब 858 करोड़ रु.) कमाई के साथ दूसरे नंबर पर काबिज हैं। हालांकि, कोरोना के बीच उनकी कमाई पिछले साल के मुकाबले 59 करोड़ रुपए बढ़ी है।

एम्बाप्पे की कमाई में 88 करोड़ का इजाफा

इस बार फ्रांस के किलियन एम्बाप्पे (21) ने सभी को चौंकाया है। वे पहली बार टॉप-5 में शामिल हुए हैं। पिछले साल वे 42 मिलियन डॉलर (करीब 220 करोड़) की कमाई के साथ 7वें नंबर पर काबिज थे। 2020 में उनकी कमाई बढ़कर 308 करोड़ रुपए तक पहुंच गई है। ब्राजील के स्टार प्लेयर नेमार जूनियर की कमाई पर भी कोरोना की मार पड़ी है। वे 96 मिलियन डॉलर (करीब 704 करोड़ रुपए) कमाई के साथ लगातार दूसरे साल तीसरे नंबर पर काबिज हैं। जबकि पिछले साल उन्होंने 770 करोड़ रुपए की कमाई की थी।

सालाह 7 पायदान की छलांग के साथ 5वें नंबर पर पहुंचे

मिस्र के मोहम्मद सालाह ने कोरोना के बीच 37 मिलियन डॉलर (करीब 271 करोड़ रुपए) की बंपर कमाई के साथ 7 पायदान की छलांग लगाई है। वे 5वें नंबर पर पहुंच गए हैं। इंग्लिश फुटबॉल क्लब लिवरपूल के स्टार प्लेयर ने पिछले साल के मुकाबले उन्होंने 87 करोड़ रुपए की ज्यादा कमाई की है।

ओवरऑल खिलाड़ियों में फेडरर टॉप पर काबिज

फोर्ब्स ने चार महीने पहले ही 2019-20 सीजन में दुनिया के सबसे ज्यादा कमाई करने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट जारी की थी। इसमें स्विट्जरलैंड के टेनिस स्टार रोजर फेडरर 106.3 मिलियन डॉलर (करीब 802 करोड़ रुपए) की कमाई के साथ टॉप पर काबिज थे। उन्होंने मेसी और रोनाल्डो की पीछे छोड़ा था।

टॉप-100 में कोहली अकेले भारतीय

भारतीयों की बात करें तो सिर्फ विराट कोहली अकेले टॉप-100 में शामिल हैं। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान कोहली 26 मिलियन डॉलर (करीब 196 करोड़ रुपए) कमाई के साथ 66वें नंबर पर काबिज हैं।

लगातार चौथे साल कोहली ने लिस्ट में जगह बनाई

कोहली लगातार चौथे साल सबसे ज्यादा कमाई करने वाले 100 खिलाड़ियों की लिस्ट में बने हुए हैं। भारतीय कप्तान 2019 में 173.3 करोड़ रुपए की कमाई के साथ 100वें नंबर पर थे। 2018 में 166 करोड़ रुपए की कमाई के साथ 83वें और 2017 में 141 करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ 89वें स्थान पर थे।

आरसीबी के गेंदबाजों की यॉर्कर बॉल फेंकने की काबिलियत से कप्तान कोहली खुश

नई दिल्ली , एजेंसी।

टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली आक्रामक खेल के लिए पहचाने जाते हैं। लेकिन कई मौकों पर दुनिया के सामने उनका मजाकिया अंदाज भी सामने आया है। ऐसा ही एक वीडियो उनकी आईपीएल फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने शेयर किया है। इसमें कोहली साथी खिलाड़ियों के साथ मस्ती करते नजर आए। यह वीडियो टीम के प्रैक्टिस सेशन का है। इसमें आरसीबी के बॉलिंग कोच एडम ग्रिफिथ ने गेंदबाजों के लिए फन बॉलिंग चैलेंज रखा था। गेंदबाजों को यॉर्कर बॉल फेंकनी थी। हर गेंदबाज को 10-10 गेंद फेंकनी थी। अपने गेंदबाजों की यॉर्कर फेंकने की काबिलियत देखकर कप्तान कोहली भी खुशी के मारे मैदान पर कूदने लगे। यह वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि कैसे वे यॉर्कर फेंकने वाले गेंदबाजों का हौसला बढ़ा रहे हैं। कोहली के साथ युजवेंद्र चहल, एबी डीविलियर्स और तमाम खिलाड़ी नजर आ रहे हैं और वे कप्तान के साथ मस्ती करते नजर आए।

कोहली टीम की तैयारियों से खुश

कोहली टीम की आईपीएल की तैयारियों को लेकर खुश हैं। उन्होंने दो दिन पहले कहा था कि 5 महीने के ब्रेक के बाद जब यूएई में हमने ट्रेनिंग शुरू की, तो शुरू में परेशानी हुई। लेकिन अब टीम लय हासिल करने के करीब है। महीनों बाद जब प्रैक्टिस में थ्रो फेंके, तो कंधों में थोड़ा दर्द और खिंचाव हो रहा था। लेकिन ट्रेनिंग करते-करते मांसपेशियां पहले की तरह काम करने लगीं और अब हर खिलाड़ी बेहतर महसूस कर रहा है।

हमने खिलाड़ियों को पूरा वक्त दिया- विराट

उन्होंने आगे कहा कि हम संतुलित तरीके से आगे बढ़े हैं। हम 6 दिनों में छह सेशन नहीं करना चाहते थे। हमने खिलाड़ियों को पूरा समय दिया और अगले कुछ ट्रेनिंग सेशन में भी ऐसा ही करेंगे। कोहली ने कहा कि टीम के सभी खिलाड़ी आईपीएल शुरू होने से पहले बिलकुल फिट और शानदार फॉर्म में दिख रहे हैं।

कोहली आईपीएल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज

कोहली आईपीएल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। उन्होंने आरसीबी के लिए 177 मैच में 5412 रन बनाए हैं। वे किसी एक सीजन में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज भी हैं। उन्होंने 2016 में 973 रन बनाए थे। तब आरसीबी के कप्तान ने 4 शतक भी लगाए थे। इस सीजन में आरसीबी का पहला मैच 21 सितंबर को सनराइजर्स हैदराबाद से होगा।

पाकिस्तान को छोड़कर 120 देशों में सारे मैचों का लाइव टेलीकास्ट होगा

नई दिल्ली , एजेंसी।

दुनिया की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग आईपीएल के 13वें सीजन का लाइव टेलीकास्ट 120 देशों में किया जाएगा। स्टार इंडिया के पास टूर्नामेंट के प्रसारण अधिकार हैं। भारत में हिंदी और इंग्लिश के अलावा स्थानीय भाषाओं में भी प्रसारण होगा। इनमें तमिल, तेलुगू, कन्नड़, बांग्ला, मलयालम और मराठी शामिल है।

दर्शक हॉटस्टार पर मैच की लाइव स्ट्रीमिंग देख सकते हैं। हालांकि, इसके लिए यूजर को प्रीमियम मेंबरशिप की जरूरत होगी। यूके-आयरलैंड में स्काई स्पोर्ट्स, अमेरिका-कनाडा में विलो टीवी जबकि ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड में फॉक्स स्पोर्ट्स पर मैच देख सकते हैं। वहीं, पाकिस्तान में टूर्नामेंट का लाइव प्रसारण नहीं होगा। इसके साथ ही अफगानिस्तान और बांग्लादेश में प्रसारण के लिए स्टार स्थानीय ब्रॉडकास्टर्स से बात कर रहा है।

धोनी की तरह मैच फिनिश करना चाहते हैं डेविड मिलर राजस्थान रॉयल्स के बल्लेबाज डेविड मिलर ने चेन्नई के कप्तान धोनी की मैच फिनिश करने की काबिलियत पर कहा, 'मैं उनका कायल हूं। वे जैसे शांत रहते हैं, आपको लगता है कि सब कुछ कंट्रोल में है। बल्लेबाज के रूप में उनकी ताकत और कमजोरियां हैं और मेरी भी। मैं उनकी तरह मैच फिनिश करना चाहता हूं।'

विराट सभी के लिए उदाहरण सेट करते हैं- डिविलियर्स रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के बल्लेबाज एबी डिविलियर्स का कहना है कि कप्तान विराट कोहली अपनी कड़ी मेहनत से टीम के अन्य खिलाड़ियों के लिए उदाहरण सेट करते हैं। उन्होंने कहा, 'जब कप्तान आगे से लीड करता है तो उसे फॉलो करना आसान होता है। मैं अभी सबसे अच्छा महसूस कर रहा हूं और मैदान पर जाने के लिए तैयार हूं। हमारे पास पर्याप्त बैकअप है। बैटिंग, बॉलिंग, फील्डिंग सभी में ऑप्शन हैं।'

मार्सेल ने 11 साल बाद डिफेंडिंग चैम्पियन पीएसजी को हराया

इसी दौरान नेमार ने मार्सेल के डिफेंडर अलवारो गोंजालेज को थप्पड़ मार दिया। उसी दौरान पीएसजी के लयविन कुरजावा और जॉर्डन अवामी के बीच भी धक्कामुक्की शुरू हो गई। देखते-देखते दोनों टीमें इसमें शामिल हो गईं। इसके बाद रैफरी जेरोम ब्रिसर्ड ने जैसे-तैसे विवाद को शांत कराया और पीएसजी के तीन खिलाड़ियों नेमार, कुरजावा और पेरेडस को रेड कार्ड दिखाकर मैदान से बाहर कर दिया।

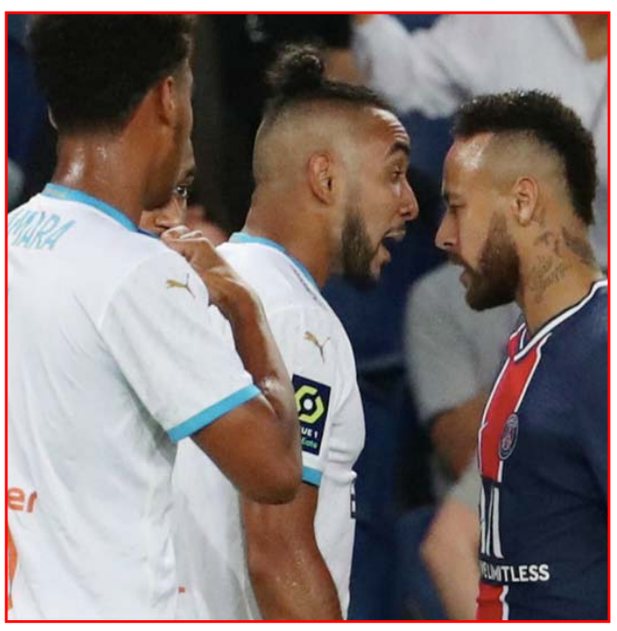

दिल्ली | एजेंसी।

कोरोना से ठीक होने के बाद पीएसजी के स्ट्राइकर नेमार की मैदान पर वापसी अच्छी नहीं रही। मार्सेल के खिलाफ रविवार को हुए मुकाबले में विरोधी खिलाड़ी अलवारो गोंजालेज को थप्पड़ मारने के कारण उन्हें रेड कार्ड दिखाया गया। हालांकि, उन्होंने गोंजालेज पर नस्लीय टिप्पणी करने का आरोप लगाया। लेकिन रैफरी ने वीडियो रिव्यू के बाद उन्हें मैदान से बाहर भेज दिया।

इससे गुस्साए नेमार ने मैच के बाद ट्वीट किया कि मुझे बस इस बात का पछतावा है कि मैंने गोंजालेज को चेहरे पर क्यों नहीं थप्पड़ मारा। पीएसजी के कोच थॉमस तुशेल ने कहा कि नेमार ने मुझे बताया था कि विरोधी टीम ने खिलाड़ी ने मेरे खिलाफ नस्लीय टिप्पणी की। वहीं, मार्सेल के कोच आंद्रे विलास ने कहा कि फुटबॉल में नस्लभेद की कोई जगह नहीं है। मुझे लगता है कि खिलाड़ियों के बीच विवाद की यह वजह नहीं है। दूसरे हाफ के इंजरी टाइम में मार्सेल के दारियो बेनेडेट्टो और लियांड्रो पेरेडेस के बीच झगड़ा हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि दोनों खिलाड़ियों के बीच हाथापाई शुरू हो गई। इसी दौरान नेमार ने मार्सेल के डिफेंडर अलवारो गोंजालेज को थप्पड़ मार दिया। उसी दौरान पीएसजी के लयविन कुरजावा और जॉर्डन अवामी के बीच भी धक्कामुक्की शुरू हो गई। देखते-देखते दोनों टीमें इसमें शामिल हो गईं। इसके बाद रैफरी जेरोम ब्रिसर्ड ने जैसे-तैसे विवाद को शांत कराया और पीएसजी के तीन खिलाड़ियों नेमार, कुरजावा और पेरेडस को रेड कार्ड दिखाकर मैदान से बाहर कर दिया। 90 मिनट के खेल में 36 फाउल हुए

इसके अलावा रैफरी ने मार्सेल के भी दो खिलाड़ियों को यही सजा दी। अंतिम कुछ मिनटों में पीएसजी 8, तो मार्सेल 9 खिलाड़ियों के साथ खेली। 90 मिनट के खेल में 36 फाउल हुए और 12 खिलाड़ियों को येलो कार्ड दिखाए गए।

मार्सेल की पीएसजी पर 20 मैच में पहली जीत

मार्सेल ने यह मैच 1-0 से जीता। टीम के लिए इकलौता गोल फ्लोरियन थोविन ने किया। मार्सेल की बीते एक दशक में पीएसजी के खिलाफ 20 मैच में यह पहली जीत है। पीएसजी के लिए फ्रेंच लीग-1 के इस सीजन की शुरुआत अच्छी नहीं रही है। पिछले महीने चैम्पियंस लीग के फाइनल में बार्यन म्यूनिख से हारने के बाद पीएसजी लीग के दो शुरुआती मैच गंवा चुकी है। 1978-79 के बाद पहली बार ऐसा हुआ है, जब टीम बिना गोल किए दो मैच हारी।

पीसीबी ने 240 खिलाड़ियों समेत कई अधिकारियों से कोरोना टेस्ट के पैसे मांगे

नई दिल्ली | एजेंसी।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है। बोर्ड ने अब घरेलू टूर्नामेंट में खेलने वाले 240 खिलाड़ियों समेत कई अधिकारियों से कोरोना टेस्ट के पैसे तक मांग लिए। सूत्रों की मानें तो बोर्ड के पास कोरोना टेस्ट के लिए लैबोरेटरी और हॉस्पिटल की सुविधा भी नहीं है।

दरअसल, पाकिस्तान में 30 सितंबर से रावलपिंडी और मुल्तान में नेशनल टी-20 चैम्पियनशिप शुरू होनी है। इसके पहले खिलाड़ियों और अधिकारियों को शुरुआती दो कोरोना टेस्ट कराना अनिवार्य है। पीसीबी ने कहा कि पहले टेस्ट के लिए पैसे चुकाने होंगे, जबकि दूसरी जांच का खर्च बोर्ड उठाएगा।

पीसीबी को स्पॉन्सर तक नहीं मिल रहा था

कोरोना के कारण पाकिस्तान की सभी क्रिकेट सीरीज टल गईं। सितंबर में पाक की मेजबानी में होने वाला एशिया कप के टलने से भी बोर्ड का काफी नुकसान हुआ। हालत यह हुई कि पाकिस्तान को जुलाई में इंग्लैंड दौरे के लिए स्पॉन्सर तक नहीं मिल रहा था। इसके बाद पेप्सी और मोबाइल कंपनी 'ईजी पैसा' ने आखिरी मौके पर स्थिति संभाली और कॉन्ट्रैक्ट बढ़ा दिया।

पीसीबी ने कर्मचारियों को भी नौकरी से निकाला

आर्थिक तंगी के चलते पीसीबी ने हाल ही में अपने 5 कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया था। बोर्ड में इस समय करीब 800 लोग काम करते हैं। सभी के परफॉर्मेंस पर नजर रखी जा रही है। पीसीबी ने गैरजरूरी और खराब परफॉर्मेंस वाले कर्मचारियों को निकालने की पूरी तैयारी कर ली है। इसी दौरान एक पीसीबी अधिकारी ने कहा था कि बोर्ड की आर्थिक हालत अच्छी नहीं है। यदि यही स्थिति रही तो पीसीबी 2 से 3 साल तक चल सकता है।

भारत से सीरीज नहीं होने पर पीसीबी को 663 करोड़ का नुकसान

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो भारत-पाकिस्तान के बीच सीरीज नहीं होने से पीसीबी को करीब 90 मिलियन डॉलर (करीब 663 करोड़ रुपए) का नुकसान हुआ है। दोनों देशों के बीच तनाव के कारण क्रिकेट नहीं खेला जा रहा है।

7 साल से नहीं हुई भारत-पाकिस्तान सीरीज

भारत और पाकिस्तान के बीच पिछली बार दिसंबर 2012 में 3 वनडे की द्विपक्षीय सीरीज खेली गई थी। पिछली सीरीज में भारत को अपने ही घर में 1-2 से हार मिली थी। यदि मैच की बात करें तो दोनों टीमों के बीच पिछले साल ही वनडे वर्ल्ड कप में मुकाबला हुआ था। इस मैच में भारतीय टीम ने हर बार की तरह वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ जीत हासिल की थी।

क्या शिबानी दांडेकर और अनुषा ने रिया चक्रवर्ती के सपोर्ट वाली सभी पोस्ट कर दी डिलीट

दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत को आज 3 महीने पूरे हो चुके हैं। सुशांत मामले में एक्टर की गर्लफ्रेंड और बॉलीवुड एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती को ड्रग्स के लेने-देन और सेवन करने के आरोप में एनसीबी ने बीते दिनों पहले उन्हें गिरफ्तार किया था। हालांकि सुशांत केस में मुख्य आरोपी के तौर पर रिया चक्रवर्ती को ही देखा जा रहा है। ड्रग्स मामले में एनसीबी द्वारा रिया चक्रवर्ती को गिरफ्तार करने के बाद कई बॉलीवुड सेलेब्स उनके समर्थन में आए थे। इसी दौरान फरहान अख्तर की गर्लफ्रेंड और रिया की करीबी दोस्तों में से एक शिबानी दांडेकर ने भी सोशल मीडिया पर कई पोस्ट रिया के समर्थन में डाली थी। सोशल मीडिया पर तो शिबानी ने रिया का समर्थन करना शुरु कर दिया था। लेकिन शिबानी के रिया को इस तरह सपोर्ट करने पर सुशांत के फैन्स ने गुस्सा जाहिर करते हुए उन्हें जमकर ट्रोल किया था। रिया चक्रवर्ती और मॉडल-एक्ट्रेस शिबानी दांडेकर काफी अच्छे दोस्त हैं। जब एनसीबी ने ड्रग्स मामले में रिया को गिफ्तार किया था तो एक्ट्रेस के सपोर्ट में शिबानी और उनकी बहन अनुषा ने सोशल मीडिया पर अपनी आवाज उठाई थी। इसी बीच मीडिया में यह खबरें आ रही हैं कि रिया के सपोर्ट मे जो भी दोनो बहनो ने पोस्ट्स शेयर की थी उन्हें शिबानी

और अनुषा ने डिलीट कर दिया है। खबरों के अनुसार सुशांत के फैन्स ने इन दोनों बहनों को रिया का समर्थन करने पर बहुत नाराजगी दिखाई थी। हालांकि सुशांत के फैन्स कड़ी आलोचना शिबानी और अनुषा की रिया को सपोर्ट करने पर कर रहे है। एनसीबी की पूछताछ में ड्रग्स के सेवन की बात रिया चक्रवर्ती ने कबूल की थी। उसके बाद से रिया चक्रवर्ती का लगातार सपोर्ट फरहान अख्तर की गर्लफ्रेंड और रिया की दोस्त शिबानी दांडेकर कर रही हैं। फिलहाल जेल में ही रिया हैं। रिया के वकील ने कोर्ट में उनकी जमानत याचिका 2 बार डाली थी जो खारिज हो चुकी है। अब ऐसा कहा जा रहा है कि रिया की जमानत के लिए बॉम्बे हाईकोर्ट उनके वकील जा रहे हैं। रिया के समर्थन में शिबानी दांडेकर के अलावा सोनम कपूर, फरहान अख्तर,करीना कपूर, रकुल प्रीत सिंह, नेहा धूपिया, श्वेता बच्चन नंदा, तापसी पन्नू यह बड़े सेलेब्स सामने आए थे और सोशल मीडिया पर सपोर्ट करते हुए पोस्ट शेयर की।

बिग बॉस 14 का ग्रैंड प्रीमियर होगा इस दिन, शो के प्रोमो वीडियो में सलमान खान जंजीरों में जकड़े हुए दिखे

टीवी का पॉपुलर रियलिटी शो बिग बॉस 14 की वापसी जल्द होन वाली है। बिग बॉस के पिछले सीजन्स की तरह इस बार भी शो का प्रीमियर धमाकेदार किया जा रहा है। बिग बॉस 13 को दर्शकों ने बहुत पसंद किया था और टीआरपी लिस्ट में इसने बाकी सीरियलों को अच्छी-खासी टक्कर दी थी। बिग बॉस 14 कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन की वजह से यह देर से शुरु हो रहा है। 3 अक्टूबर को बिग बॉस 14 का ग्रेंड प्रीमियर होने जा रहा है। कलर टीवी ने सोशल मीडिया पर हाल ही में एक प्रोमो वीडियो शो का शेयर किया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि बिग बॉस के होस्ट सलमान खान जंजीरों में जकड़े हुए मास्क लगाकर दिखाई दे रहे हैं। जंजीरों को तोड़ते हुए सलमान खान ने वीडियो में कहा है कि, बोरडम होगा चकनाचूर, टेंशन का उड़ेगा फ्यूज, स्ट्रेस का बजेगा बैंड और होपलेसनेस की बजेगी पूंगी। अब सीन पलटेगा। क्योंकि बिग बॉस देगा 2020 को जवाब। बिग बॉस के फैन्स को शो का नया प्रोमो पसंद आया है। इतना ही नहीं दर्शकों ने अपनी प्रतिक्रिया भी इस प्रोमो पर देनी शुरु कर दी है। बता दें कि मीडिया खबरों में बिग बॉस 14 के कंटेस्टेंट की लिस्ट भी सामने

आई थी। इस लिस्ट में नैना सिंह, जैस्मीन भसीन, निशांत सिंह मल्कानी, शगुन पांडे, पवित्र पुनिया, कुमार जानू, सारा गुरपाल यह सितारे शो का हिस्सा बन सकते हैं।

आलिया भट्ट ने शेयर की लेटेस्ट पोस्ट, लिखा- नहीं रुक सकती, न रुकूंगी, आगे बढ़ती रहूंगी

बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर की बहन रिद्धिमा कपूर की बर्थडे पार्टी के बाद आलिया भट्ट ने एक पोस्ट शेयर की। उन्होंने हॉलीवुड सिंगर टेलर स्विफ्ट के गाने 'शेक इट ऑफ' के कुछ बोल लिखे। आलिया भट्ट ने एक फोटो भी शेयर की। इस फोटो में उन्होंने व्हाइट कलर की स्पैगेटी पहनी हुई है। बाल खुले हैं और न्यूड मेकअप किया हुआ है। आलिया पोस्ट शेयर करते हुए लिखती हैं, 'मैं लक्ष्य की ओर चलती रहूंगी, नहीं रुक सकती, न रुकूंगी, बस आगे बढ़ती रहूंगी।' आपको बता दें कि आलिया भट्ट शूटिंग पर वापस लौट चुकी हैं। हाल ही में उन्हें संजय लीला भंसाली के ऑफिस के बाहर स्पॉट किया गया था। वहीं, आलिया भट्ट इस समय रणबीर कपूर को डेट कर रही हैं। दोनों की बॉन्डिंग काफी शानदार नजर आती है। दोनों ही एक-दूसरे के परिवार के साथ क्वॉलिटी टाइम भी स्पेंड करते हैं। हाल ही में रिद्धिमा कपूर की बर्थडे पार्टी में आलिया और रणबीर साथ नजर आए। रिद्धिमा के बर्थडे सेलिब्रेशन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। इसमें रणबीर कपूर और आलिया भट्ट आप जैसा कोई सॉन्ग पर जबरदस्त डांस करते हुए नजर आ रहे हैं। दोनों सितारों के डांस को बहुत पसंद किया जा रहा है। दोनों की जोड़ी काफी क्यूट लग रही है। वीडियो में रणबीर और आलिया भट्ट ब्लू कलर के आउटफिट पहने हुए दिख रहे हैं। फैन्स इस वीडियो को जमकर लाइक और शेयर कर रहे हैं। आलिया और रणबीर कपूर फिल्म ब्रह्मास्त्र में नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन अयान मुखर्जी कर रहे हैं। फिल्म में रणबीर के अलावा अमिताभ बच्चन और मौनी रॉय जैसे सितारे भी काम कर रहे हैं।

सुशांत मामला: एनसीबी ने शोविक के स्कूल के दोस्त सूर्यदीप मल्होत्रा को किया गिरफ्तार

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने शोविक चक्रवर्ती के स्कूल के दोस्त सूर्यदीप मल्होत्रा से पूछताछ करने के एक दिन बाद मंगलवार को उसे गिरफ्तार कर लिया। अधिकारियों ने कहा कि सुशांत की मौत के जांच के सिलसिले में उन्होंने यह गिरफ्तारी की है। एनसीबी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मामले में सूर्यदीप की संलिप्तता पाए जाने के बाद एजेंसी ने उसे गिरफ्तार किया है। एनसीबी ने मुंबई में उसके घर की तलाशी के बाद उसे बाहर निकाला। अधिकारी ने कहा कि उसे दिन में अदालत में पेश किया जाएगा। एनसीबी द्वारा इस मामले में यह अब तक की 15 वीं गिरफ्तारी है। 14 जून को सुशांत बांद्रा स्थित अपने फ्लैट में मृत पाए गए थे। उनकी रहस्यमयी मौत की जांच सीबीआई, ईडी और एनसीबी कर रही हैं। इस मौत ने राजनीतिक स्तर पर और बॉलीवुड में खासी उथल-पुथल मचा दी है। इससे पहले एनसीबी ने 8 सितंबर को सुशांत की प्रेमिका रिया चक्रवर्ती को, 4 सितंबर को रिया के भाई शोविक, सुशांत के घर के मैनेजर सैमुअल मिरांडा और निजी स्टाफ दीपेश सावंत को गिरफ्तार किया था। एनसीबी ने रविवार को 6 और लोगों को गिरफ्तार किया। जिनमें शोविक को ड्रग सप्लाई करने वाले लोग भी हैं। इन लोगों में करनजीत सिंह आनंद, ड्वेन फर्नांडिस, संकेत पटेल, अंकुश अनेरेजा, संदीप गुप्ता और आफ्ताब फ्तेह अंसारी के शामिल हैं। एनसीबी के एक सूत्र ने कहा कि एजेंसी ने रिया की मां संध्या का मोबाइल फोन भी जब्त कर लिया है। ड्रग्स की खरीद के लिए क्या संध्या के फोन से कॉल या मैसेज किए गए हैं, इस बारे में भी एनसीबी जांच करेगी।

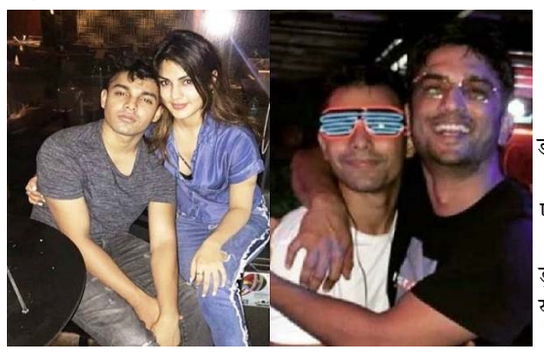

ड्रग्स मामले में विवेक ओबेरॉय के साले आदित्य अल्वा की बढ़ी मुश्किल, पुलिस ने जारी किया सर्च वारंट

हाल ही में सैंडलवुड ड्रग स्कैंडल का खुलासा हुआ है. ड्रग्स केस में कन्नड़ अभिनेत्री रागिनी द्विवेदी को बेंगलुरु में गिरफ्तार किया गया था. ड्रग रैकेट में बॉलीवुड एक्टर विवेक ओबेरॉय के साले आदित्य अल्वा का भी नाम है. पुलिस आदध्यि के घर का सर्च वारंट जारी कर घर की तलाशी ले रही है.कुछ दिन पहले ही सेंट्रल क्राइम ब्रांच ने कर्नाटक के एक्स मिनिस्टर रहे जीवराज के बेटे और विवेक ओबेरॉय के साले आदित्य पर केस दर्ज किया था. आदित्य अल्वा का नाम एफआईआर में दर्ज 12 आरोपध्यिों के नाम में शामिल है. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, बेंगलुरु जॉइंट कमिशनर क्राइम संदीप पाटिल ने बताया कि हेब्बल के नजदीक स्थित आदित्य अल्वा के घर हाउस ऑफ लाइव्सश् का सर्च वारंट जारी किया गया है. उनके घर की तलाशी ली जा रही है. वहीं, आदित्य को अभी तक कस्टडी में नहीं लिया गया है.बता दें कि पार्टी ऑर्गेनाइजर विरेन खन्ना, बिजनेसमैन प्रशांत रांका, वैभव जैन, आदित्य अल्वा, अफ्रीकन ड्रग सप्लायर लोम पेपर सांबा, प्रशांत राजु, अश्विन, अभिस्वामी, राहुल टोंसे और विनय के खिलाफ केस दर्ज किया गया है. इन लोगों पर आरोप है कि इन्होंने पार्टी के दौरान सेलेब्स, इंडस्ट्रियलिस्ट और टेक इंडस्ट्री से जुड़े लोगों से पैसे के बदले ड्रग्स की डील की. आदित्य के बारे में एफआईआर में लिखा गया है कि वो 5 जुलाई को येलहेंका में प्राइवेट होटल में हुई पार्टी में शामिल था. पिछले दिनों सैंडलवुड ड्रग रैकेट मामले में एक्ट्रेस रागिनी द्विवेदी और संजना गलरानी के ड्रग टेस्ट किए गए थे. ड्रग्स टेस्ट के दौरान रागिनी ने यूरिन में पानी मिलकार धोखा देने की कोशिश की थी. लेकिन डॉक्टर्स ने सैंपल में पानी की पहचान कर ली. जिसके बाद पानी पिलाकर दोबारा अभिनेत्री का सैंपल लिया गया था।

कंगना का जया बच्चन पर पलटवार,बोलीं- सुशांत की जगह आपका बेटा होता और मेरी जगह आपकी बेटी और तो भी यही कहतीं

राज्यसभा सांसद जया बच्चन ने मानसून सत्र के दूसरे दिन रवि किशन का नाम लिए बिना केंद्र सरकार से बॉलीवुड की सुरक्षा करने की गुजारिश की है। साथ ही जया ने रवि किशन पर ताना भी मारा है और कहा कि लोग जिस थाली में खाते हैं,उसी में छेद करते हैं। अब जया बच्चन की इस बात को सुनकर भला पंगा क्वीन कहा शांत बैठने वालों में से हैं,तो बस कंगना रनौत ने जया के इस बयान पर रिएक्ट किया है। कंगना ने जया बच्चन की बेटी श्वेता नंदा बच्चन और अभिषेक बच्चन का नाम भी शामिल किया है। अभिनेत्री कंगना रनौत ने अपने ट्वीट में लिखा जया जी क्या आप तब भी यही कहतीं अगर मेरी जगह पर आपकी बेटी श्वेता को किशोरावस्था में पीटा गया होता, ड्रग्ज दिए गए होते और शोषण होता। क्या आप तब भी यही कहतीं अगर अभिषेक लगातार धमकियां और शोषण की बात करते और एक दिन फांसी से झूलते पाए जाते? थोड़ी हमदर्दी हमसे भी दिखाइए। दरअसल एक दिन पहले गोरखपुर से सांसद रवि किशन संसद के मानसून सत्र के पहले दिन बॉलीवुड में बढ़ते ड्रग्स के सेवन और इसकी तस्करी के मुद्दे को उठाया। इस दौरान उन्होंने कहा,भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में ड्रग्स की लत बहुत ज्यादा है। इसमें बहुत लोगों को पकड़ लिया गया है। वैसे एनसीबी बहुत अच्छा काम भी कर रही है। मैं केन्द्र सरकार से अपील करता हूं वह इस पर अपनी सख्त कार्रवाई जारी रखे। इसके अलावा रवि ने का दोषियों को जल्दी ही पकड़ा जाए और उन्हें सजा दी जाए जिससे की पड़ोसी देशों की साजिश का खत्मा हो सके। गौरतलब है कि सुशांत सिंह राजपूत के निधन के बाद से ही कंगना रनौत बॉलीवुड के कई सितरों पर हल्ला बोल रही है।

बॉलीवुड की तुलना गटर से करने वालों को जया ने लगाई फटकार सरकार से मांगा समर्थन

बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच में निकले बॉलीवुड ड्रग एंगल को लेकर चल रहे विवाद के बीच समाजवादी पार्टी की सांसद और दिग्गज अभिनेत्री जया बच्चन ने मंगलवार को उन अभिनेताओं को फटकार लगाई, जिन्होंने इस इण्डस्ट्री को गटर कहा है। इस मामले पर सरकार का समर्थन लेने के लिए बच्चन ने सभापति एम. वैंकेया नायडू से कहा, सर, मैं बात करना चाहती हूं। नायडू ने उन्हें रोककर मास्क पहनने के लिए कहा तो वह बोलीं कि इससे उनकी आवाज साफ नहीं आएगी।

इसके बाद उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा, मेरा नाम जया बच्चन है। इस पर नायडू ने कहा कि वे मशहूर हैं और उन्हें अपना परिचय देने की जरूरत नहीं है। इस पर उन्होंने जबाव दिया, लेकिन उसी उद्योग को कलंकित किया जा रहा है। मनोरंजन उद्योग हर रोज 5 लाख रोजगार देता है और अप्रत्यक्ष तौर पर 50 लाख लोगों को आजीविका देता है। उन्होंने आगे कहा, ऐसे समय में जब स्थिति निराशाजनक है और रोजगार सबसे खराब स्तर पर है। लोगों का ध्यान हटाने के लिए सोशल मीडिया के जरिए हमें कोसा जा रहा है। ऐसा इसीलिए है क्योंकि इण्डस्ट्री को सरकार का समर्थन नहीं मिल रहा है। किसी का नाम लिए बिना उन्होंने कहा, जिन लोगों ने उद्योग के जरिए नाम कमाया है, उन्होंने इसे एक नाली (गटर) कहा है। मैं पूरी तरह से असहमत हूं। मैं इनसे खुद को अलग करती हूं। मुझे उम्मीद है सरकार ऐसा करने वालों को रोकेगी। उन्होंने कहा कि उद्योग में ऐसे लोग हैं, जो सबसे ज्यादा टैक्स देने वालों में शामिल हैं और उन्हें परेशान किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा, ष्मुझे लगता है कि सरकार को मनोरंजन उद्योग के साथ खड़े होना चाहिए क्योंकि सरकार जो भी प्रयास करती है इण्डस्ट्री हमेशा मदद के लिए आगे आती है। यदि राष्ट्रीय आपदा आती है तो वे पैसा देते हैं। कुछ लोगों (बुरे काम करने वाले) के कारण आप पूरे उद्योग की छवि को धूमिल नहीं कर सकते। दिग्गज अभिनेत्री ने बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन से शादी की है। उन्होंने आगे कहा कि मनोरंजन उद्योग ने देश की अंतरराष्ट्रीय नाम और पहचान बनाई है। गोरखपुर से भाजपा सांसद और अभिनेता रवि किशन का नाम लिए बिना जया बच्चन ने उनके लिए कहा, मैं वास्तव में शर्मिंदा हूं कि एक लोकसभा सांसद ने फिल्म उद्योग के खिलाफ बात की। जिस थाली में खाते हैं, उसी में छेद करते हैं। बता दें कि बॉलीवुड में ड्रग्स के इस्तेमाल को लेकर कंगना रनौत समेत कई कलाकारों ने इस पर टिप्पणियां की हैं।

अनुराग कश्यप के मौत की अफवाह केआरके की वेबसाइट ने की साझा फिल्ममेकर ने दिया करारा जवाब

बॉलीवुड के मशहूर फिल्ममेकर अनुराग कश्यप ने अपने मृत खबरों पर विराम लगाता और एक्टर-प्रोड्यूसर कमाल राशिद खान की वेबसाइट की बोलती बंद करते हुए ट्वीट किया है। बता दें कि अनुराग कश्यप की एक तस्वीर केआरके ने अपने ट्विटर अकाउंट से शेयर करते हुए लिखा था कि अब अनुराग कश्यप इस दुनिया में नहीं रहे। अनुराग कश्यप के निधन की खबर सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। जिसके बाद अनुराग कश्यप ने अपने ही अंदाज में केआरके को करारा जवाब दिया। केआरके की वेबसाइट के खिलाफ अनुराग ने ट्वीट करते हुए लिखा, कल यमराज के दर्शन हुए। आज यमराज खुद घर आकर छोड़ गए। बोले-अभी तो और फिल्में बनानी हैं तुम्हें। तुम फिल्म नहीं बनाओगे और बेवकूफ भारत उसका बायकॉट नहीं करेंगे तो उनका जीवन सार्थक नहीं होगा। उनको सार्थकता मिले, इसलिए वापस छोड़ गए मुझे।'गैंग्स ऑफ वासेपुर'और 'सेक्रेड गेम्स'के फिल्ममेकर अनुराग कश्यप को केआरके की वेबसाइट के ट्विटर अकाउंट से श्रद्धांजलि देते हुए लिखा था, आत्मा को शांति मिले अनुराग कश्यप। वे बहुत ही महान स्टोरीटेलर थे। हमें आपकी हमेशा याद आएगी सर।

कंचन उजाला
हिंदी दैनिक

स्वामी नमोकंचन कार्पोरेट सर्विसेस (एल.एल.पी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कंचन सोलंकी द्वारा उमाकान्ती ऑफसेट प्रेस, ग्राम डेहवा पोस्ट मोहनलाल गंज लखनऊ से मुद्रित एवं 61/18 चुटकी भण्डार हुसैनगंज लखनऊ से प्रकाशित।

संपादक- कंचन सोलंकी

TITLE CODE- UPHIN48974

Mob: 8896925119, 9695670357
Email: kanchansolanki397@gmail.com

नोटः समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारो एवं लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नही। समस्त विवादो का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।